भूमिका

गद्य का विकास : संक्षिप्त परिचय

अभ्यास-प्रश्न

निबन्ध

1. निबन्ध गद्य की ऐसी विद्या है जिसमें निबन्धकार अपने भाव या विचार को सुसंगठित, व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध तरीके से प्रस्तुत करता है।
2. हिन्दी में निबन्ध का प्रारंभ भारतेन्दु युग से माना जाता है। दो युग प्रवर्तक निबन्ध लेखकों के नाम—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र तथा आचार्य महावीर प्रसाद द्विवदी।
3. रामवृक्ष बेनीपुरी तथा यशपाल।
4. महावीर प्रसाद द्विवदी तथा बाल मुकुंद गुप्त।
5. निबन्ध के प्रकार—विचारात्मक निबन्ध, भावात्मक निबन्ध, वर्णनात्मक निबन्ध तथा विवरणात्मक निबन्ध।
6. हिन्दी निबन्ध के विकास में दूसरे परिमार्जन युग का प्रारंभ सन् 1900 से माना जाता है।
7. महादेवी वर्मा, सुमित्रानन्दन पन्त, माखनलाल चतुर्वेदी तथा जयशंकर प्रसाद।
8. हजारीप्रसाद द्विवेदी, हरिशंकर परसाई, रामवृक्ष बेनीपुरी, विद्या निवास मिश्र।
9. हिन्दी निबन्ध का श्री गणेश अंग्रेजी निबन्धों तथा संस्कृत रचनाओं के माध्यम से हुआ।
10. हिन्दी निबन्ध के विकास का काल-विभाजन भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, प्रसाद युग तथा प्रसादोत्तर युग।
11. विचारात्मक निबंध में लेखक किसी विषय पर सुसम्बद्ध रीति से अपने विचार विशेष दृष्टि के साथ प्रस्तुत करता है, जबकि भावात्मक निबंध में लेखक के हृदय में नि:सृत भाव-धारा ही उसके विचार सूत्रों का नियंत्रण करती है।
12. वियोगी हरि, सरदार पूर्णसिंह, रघुवीर सहाय तथा विद्यानिवास मिश्र।

उपन्यास

1. हिन्दी उपन्यास के विकास को चार काल-खण्डों में विभाजित किया जा सकता है—1. भारतेन्दु युग 2. द्विवेदी युग 3. प्रेमचन्द युगीन हिन्दी उपन्यास 4. प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी उपन्यास।
2. उपन्यास की परिभाषा डा० भागीरथ मिश्र के अनुसार—"युग की गतिशील पृष्ठ-भूमि पर सहज शैली में स्वाभाविक जीवन की एक पूर्ण झाँकी प्रस्तुत करने वाला काव्य उपन्यास कहलाता है।
3. लाला श्री निवास दास लिखित 'परीक्षा गुरु' हिन्दी का प्रथम उपन्यास है।
4. हिन्दी के सुप्रसिद्ध उपन्यास लेखकों के नाम—जयशंकर प्रसाद, प्रेमचन्द, देवकीनन्दन खत्री, वृन्दावन लाल वर्मा, जैनेन्द्र, अज्ञेय।
5. उपन्यास के तत्व—कथावस्तु या घटनाक्रम, पात्र या चरित्र-चित्रण, कथोपकथन, शैली, देशकाल या वातावरण, उद्देश्य।
6. जयशंकर प्रसाद, जैनेन्द्र।
7. प्रमुख आंचलिक उपन्यासकारों के नाम—फणीश्वर नाथ रेणु, नागार्जुन, उदय शंकर भट्ट, अमृतलाल नागर।
8. सेवासदन, निर्मला, गबन, गोदान, रंगभूमि।
9. कंकाल, तितली, इरावती, अपूर्ण।
10. चित्रलेखा, टेढ़े मेढ़े रास्ते, भूले-बिसरे चित्र।
11. पण्डित किशोरी लाल गोस्वामी तथा गोपालराम गहमरी।
12. जयशंकर प्रसाद, आचार्य चतुरसेन शास्त्री, विशम्भर नाथ शर्मा 'कौशिक', भगवती शरण वर्मा, वृन्दावन लाल वर्मा।
13. मैला आँचल।
14. जैनेन्द्र, इलाचन्द्र जोशी, अज्ञेय, यशपाल, रांगेय राघव, अमृतलाल नागर।
15. जैनेन्द्र, इलाचन्द्र जोशी, अज्ञेय।
16. प्रेमचन्द के उपन्यास ग्रामीण पृष्ठभूमि, गरीब, साहूकारी, महिला-उद्धार कृषकों के जीवन से जुड़ी समस्याओं पर आधारित है।
17. यथार्थवादी समाज तथा महिला की दीन-हीन स्थिति का वर्णन, करके समाज के समक्ष उनकी समस्याओं को प्रस्तुत करना।
18. सन् 1990।
19. यर्थाथवादी दृष्टिकोण का वर्णन करना।
20. जैनेन्द्र, इलाचन्द्र जोशी, अज्ञेय, यशपाल, फणीश्वरनाथ 'रेणु'।

कहानी

1. **कहानी की परिभाषा**—कहानी एक कथात्मक गद्य विद्या है, जिसमें किसी एक घटना या जीवन के मार्मिक अंश का वर्णन पूर्ण अन्विति के साथ होता है।
2. हिन्दी की प्रथम आधुनिक कहानी का नाम 'एक टोकरी भर मिट्टी' है।
3. किसी पात्र, घटना, भाव या संवेदना की मार्मिक अभिव्यंजना करना है।
4. प्रेमचन्द—नमक का दरोगा, जयशंकर प्रसाद—पुरस्कार।
5. इन्दुमती।
6. जैनेन्द्र कुमार तथा अज्ञेय।

7. (i) प्रेमचन्द पूर्व की कहानी—सन् 1910 से पूर्व।
(ii) प्रेमचन्द काल की कहानी—सन् 1910 से सन् 1936 तक।
(iii) प्रेमचन्दोत्तर कहानी—सन् 1936 से सन् 1950 तक।
(iv) नई कहानी—सन् 1950 से आज तक।
8. प्रसाद की कहानियों के मूल विषय नारी की दीन दशा, सामाजिक तथा देश प्रेम से सम्बन्धित हैं।
9. मुंशी प्रेमचन्द तथा चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी'।
10. कथावस्तु, पात्र अथवा चरित्र-चित्रण, कथोपकथन अथवा संवाद, देशकाल अथवा वातावरण, भाषा-शैली तथा उद्देश्य।
11. प्रेमचन्द का कथा-साहित्य उस समय में जितना यर्थाथवादी था आज के समय में भी कहानी उन सभी मूल्यों और मानदण्डों पर खरी उतरती है।
12. जयशंकर प्रसाद।
13. प्रेमचन्द तथा जयशंकर प्रसाद।
14. कहानी में कला की दृष्टि से नियमों का पालन नहीं किया जाता था जबकि नई कहानी में तमाम तरह के नियमों का पालन किया जाता है।
15. नमक का दरोगा, पंचपरमेश्वर, बड़े घर की बेटी, ईदगाह, बूढ़ी काकी।

नाटक

1. जो रचना श्रवण द्वारा ही नहीं अपितु दृष्टि द्वारा भी दर्शकों के हृदय में रसानुभूति कराती है उसे नाटक कहते हैं।
2. 'नट' अर्थात् 'अभिनेता' के माध्यम से प्रस्तुत तथा अभिनीत होने की वजह से इस रंगमंच से जुड़े साहित्य को 'नाटक' के नाम से सम्बोधित किया जाता है।
3. (i) पूर्व भारतेन्दु युग (सन् 1843 ई० से सन् 1866 ई० तक)
(ii) भारतेन्दु युग (सन् 1867 ई० से सन् 1904 ई० तक)
(iii) उत्तर भारतेन्दु युग—(सन् 1905 से सन् 1915 तक)
(iv) प्रसाद युग—(सन् 1915 से सन् 1920 तक)
(v) आधुनिक युग—(सन् 1920 से आज तक)
4. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, अम्बिका दत्त व्यास, बाल कृष्ण भट्ट, प्रताप नारायण मिश्र तथा लाला श्री निवास दास।
5. जयशंकर प्रसाद, लक्ष्मीनारायण मिश्र, उदयशंकर भट्ट, हरिकृष्ण प्रेमी तथा निराला।
6. जयशंकर प्रसाद—स्कन्द गुप्त, ध्रुवस्वामिनी, चन्द्रगुप्त।
7. विष्णु प्रभाकर शास्त्री, डा० लक्ष्मी नारायण लाल, राकेश, उपेन्द्रनाथ 'अश्क'।
8. विष्णु प्रभाकर शास्त्री, डा० लक्ष्मी नारायण लाल।
9. नाटक में अभिनय करने वाले पात्र दूसरे व्यक्ति के वेश तथा रूप धारण करते हैं। पात्रों के इस प्रकार रूप परिवर्तन करने के कारण ही नाटक को रूपक की संज्ञा से विभूषित किया जाता है।
10. दमयन्ती, सुदामा तथा संयोगिता स्वयंवर।
11. कर्त्तव्य, चक्रव्यूह तथा कर्ण।
12. प्रेम, दर्शन, राष्ट्रीय भावना, भारतीय इतिहास तथा भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता को उजागर करना है।
13. कथावस्तु, संवाद, चरित्र-चित्रण, देशकाल एवं वातावरण, भाषा-शैली, उद्देश्य।
14. जयशंकर प्रसाद।

एकांकी

1. एक अंक तथा छोटी जगह एवं समय में अभिनीत होने वाले नाटक को एकांकी के नाम से संबोधित किया जाता है।
2. कथावस्तु, पात्र-योजना, चरित्र-चित्रण, भाषा-शैली, देशकाल तथा वातावरण तथा उद्देश्य।
3. रामकुमार वर्मा, विष्णु प्रभाकर तथा विनोद रस्तोगी।
4. धर्मवीर भारती तथा लक्ष्मीनारायण लाल।
5. (i) सेठ गोविन्द दास—सच्चा धर्म,
(ii) राम कुमार वर्मा—दीपदान,
(iii) उपेन्द्र नाथ 'अश्क'—तौलिए।
6. जयशंकर प्रसाद, उपेन्द्र नाथ 'अश्क', डा० रामकुमार वर्मा, जैनेन्द्र कुमार।
7. एकांकी के अन्तर्गत स्थान, कार्य तथा समय को संकलन त्रय कहते हैं। एक ही जगह, एक ही घटना का एक ही समय में पूर्ण होना आवश्यक है।
8. नाटक की कथा दीर्घ तथा अनेक अंकों में विभक्त होती है जबकि एकांकी के अन्तर्गत किसी एक भाव, प्रसंग अथवा घटना का एक अंक में विशेष ढंग से विवेचन होता है।

आत्मकथा एवं जीवनी

1. लेखक अपने जीवन के विषय में घटित घटनाओं का साहित्यिक विवरण प्रस्तुत करता है, उसे आत्मकथा कहते हैं।
2. बाबू गुलाब राय, काका कालेलकर, हरिवंशराय बच्चन, वियोगी हरि, डा० राजेन्द्र प्रसाद।
3. आत्म निरीक्षण के आधार पर अपने जीवन विषयक तथ्यों तथा घटनाओं का उल्लेख किया जाता है।
4. बाबू गुलाबराय—मेरी असफलताएँ।
5. किसी व्यक्ति द्वारा किसी दूसरे के जीवन संबंधी लेखन को जीवनी कहते हैं।
6. अमृतराय—कलम का सिपाही।
7. अमृतराय, जय प्रकाश भारती, डा० रामविलास शर्मा, जैनेन्द्र कुमार तथा राम नरेश त्रिपाठी।

पत्र-पत्रिकाएँ

1. कविवचन सुधा—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
2. सरस्वती, माधुरी, हंस, विशाल।
3. पण्डित श्री राम शर्मा, चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी'।
4. महादेवी वर्मा—चाँद।
5. बालकृष्ण भट्ट—हिन्दी प्रदीप।
6. 'हिन्दी प्रदीप'—बालकृष्ण भट्ट।
'ब्राह्मण'—प्रताप नारायण मिश्र।
7. आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी।
8. सरस्वती।
9. धर्म युग—धर्मवीर भारती, गणेश मंत्री।
कादम्बिनी—राजेन्द्र अवस्थी।
10. बद्री नारायण चौधरी 'प्रेमधन'।
11. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, स्थान—काशी।
12. देवकीनन्दन खत्री व माधव प्रसाद मिश्र।

13. साहित्य संदेश—बाबू गुलाब राय।
हंस—प्रेमचन्द।
14. माखनलाल चतुर्वेदी।
15. दुलारेलाल भार्गव, स्थान—लखनऊ।

अन्य विधाएँ

1. रेखाचित्र में रचनाकार अपने सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति अथवा घटना का यथार्थ चित्रण इस प्रकार करता है कि उसका चित्र-सा उपस्थित हो जाय।
2. संस्मरण स्वयं से सम्बद्ध, व्यक्ति, घटना आदि का स्मृति पर आधारित सत्य कथन होता है।
3. रेखाचित्र के अन्तर्गत शब्दों के प्रयोग की कुशलता एवं कल्पना का पुट होता है जबकि संस्मरण के माध्यम से यथार्थ, सरल एवं सरस विवेचन प्रस्तुत किया जाता है।
4. महादेवी वर्मा, रामवृक्ष बेनीपुरी।
5. महादेवी वर्मा तथा अज्ञेय।
6. लेखक द्वारा अपने दिन-प्रतिदिन के जीवन से संबंधित स्मरण योग्य घटनाओं का जो साहित्यिक ब्यौरा प्रस्तुत किया जाता है। वह 'डायरी' गद्य विद्या है।
7. रिपोर्ताज के अन्तर्गत गद्य रूप में घटना अथवा तथ्यों का सजीव एवं यथार्थ रूप में अंकन किया जाता है। इसमें आँखों देखा विवरण होता है।
8. लेखक द्वारा यात्रा विशेष का जो सजीव तथा सरल शैली में वर्णन किया जाता है, उसे यात्रा-वृत्त कहते हैं।
9. महान पुरुषों तथा वैज्ञानिकों, समाज-सुधारक, शिक्षा-विद् तथा राजनीतिज्ञों से भेंट करके उनकी भावनाओं तथा विचारों को कलात्मक रूप में व्यक्त करने को भेंट वार्ता कहा जाता है।
10. राहुल सांकृत्यायन, मोहन राकेश तथा विनय मोहन शर्मा।
11. राहुल सांकृत्यायन से तथा शुक्ल युग में सर्वाधिक यात्रावृत्त लिखे गये।
12. डॉ०रांगेय राघव, धर्मवीर भारती, फणीश्वरनाथ रेणु, विष्णुकांत शास्त्री।
13. महादेवी वर्मा तथा रामवृक्ष बेनीपुरी।
14. रेखाचित्र तथा संस्मरण।
15. स्मृति, स्मृति को ताजा करने का प्रयास तथा साहित्यिक ब्यौरा यात्रा साहित्य के तत्व है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पृ०सं० 11 पर देखिए।
2. पृ०सं० 11 देखिए।
3. मिश्र जी के निबन्धों में विषय की पर्याप्त विविधता है। देश-प्रेम, समाज-सुधार एवं साधारण मनोरंजन मिश्रजी के निबंधों का मुख्य विषय थे। उन्होंने 'ब्राह्मण' मासिक पत्र में हर प्रकार के निबन्ध लिखे।
4. श्याम सुन्दरदास ने अपना लेखन कार्य जिस जमाने में शुरु किया उस समय का वातावरण हिन्दी के लिए अत्यंत प्रतिकूल था। ऐसी प्रतिकूल परिस्थिति में हिन्दी गद्य के प्रचार-प्रसार और संवर्धन के लिए उन्होंने काशी नागरी प्रचारिणी सभा को केन्द्र बनाकर जो अभूतपूर्व संघर्षबद्ध प्रयत्न किया उनका ऐतिहासिक महत्व है।
5. बाबू गुलाबराय ने आलोचना और निबंध दोनों ही क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा व मौलिकता का परिचय दिया।
6. पृ०सं० 11 पर देखिए।
7. पृ०सं० 12 पर देखिए।
8. प्रेमचन्द ने भारतीय जन-जीवन की समस्याओं को गहराई से समझा। उनके उपन्यास आम आदमी के दुख-दर्द की दास्तान है।
9. पृ०सं० 14 पर देखिए।
10. पृ०सं० 13-14 पर देखिए।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. वाक्यों में अभिव्यक्त विचारधारा रचना गद्य कहलाती है।
2. मुंशी सदासुख लाल, इंशा अल्ला खाँ, लल्लू लाल तथा सदल मिश्र।
3. राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द तथा राजा लक्ष्मण सिंह।
4. निबंध, नाटक, उपन्यास तथा कहानी।
5. आदर्शवाद तथा समाज-सुधार की प्रवृत्ति का प्राधान्य।
6. गद्य का प्रौढ़ तथा परिमार्जित रूप दिखाई पड़ता है। अनेक विधाओं का अभ्युदय हुआ है विभिन्न शैलियाँ विकसित हुईं।
7. निबन्ध, आत्मकथा, संस्मरण, नाटक, एकांकी, उपन्यास, समालोचना, यात्रावृत्त, कहानी तथा रेखाचित्र।
8. भेटवार्त्ता तथा रिपोर्ताज।
9. इस युग में साहित्य में अनेक शैलियाँ/विधाएँ विकसित हुईं। इसकी भाषा सक्षम एवं सशक्त है। घटना, वस्तु अथवा व्यक्ति का यथार्थ चित्रण है।
10. रिपोर्ताज तथा भेंटवार्ता।
11. जयशंकर प्रसाद तथा महादेवी वर्मा।

पद्य का विकास : संक्षिप्त परिचय

अभ्यास-प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पृ०सं० 25 पर देखिए।
2. पृ०सं० 25 पर देखिए।
3. पृ०सं० 25 पर देखिए।
4. पृ०सं० 25 पर देखिए।
5. पृ०सं० 26 पर देखिए।
6. पृ०सं० 25 पर देखिए।
7. पृ०सं० 25 पर देखिए।
8. पृ०सं० 26 पर देखिए।
9. पृ०सं० 26 पर देखिए।
10. पृ०सं० 26 पर देखिए।
11. पृ०सं० 26 पर देखिए।
12. पृ०सं० 26 पर देखिए।
13. पृ०सं० 26 पर देखिए।
14. पृ०सं० 26 पर देखिए।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. लौकिक श्रृंगार निरुपण, प्रेम साधना।
2. घनानन्द।
3. घनानन्द, बिहारी।
4. लौकिक श्रृंगार का निरुपण, प्रेम साधना।
5. महादेवी वर्मा, सुमित्रानन्दन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, जयशंकर प्रसाद।
6. (i) सड़ी-गली रुढ़ियों का विरोध।
   (ii) शोषण तथा अन्याय के प्रति रोष।
   (iii) कवि शिवमंगल सिंह सुमन तथा नागार्जुन।
7. नागार्जुन, गजानन्द, माघव।
8. (i) घोर यथार्थवादी दृष्टि।
   (ii) मानव की समानता में आस्था।
9. अवधी।
10. सूरदास, नन्ददास, कुम्भनदास, छीतस्वामी।
11. मुकुल तथा त्रिधारी।
12. पृ०सं०6 का उत्तर देखिए अतिलघु में।
13. तुलसीदास।
14. (i) प्रेम और सौन्दर्य का निरुपण।
    (ii) वेदना एवं निराशा की भावना।
    (iii) तुलसीदास।
15. सन् 1959 में।
16. अयोध्या सिंह 'हरिऔध'।
17. केशवदास, चिन्तामणि त्रिपाठी।
18. पंडित जगन्नाथ मिश्र।
19. गजानन माधव मुक्ति बोध।
20. (i) अनुभूति की सच्चाई
    (ii) बुद्धि मूलक यथार्थवादी दृष्टि।
21. कबीरदास, मलिक मोहम्मद जायसी।
22. केदारनाथ अग्रवाल, नागार्जुन।

❖ ❖

1 मित्रता

–आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

(जीवन काल–सन् 1884–1941 ई.)

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पृ०सं० 31 पर देखिए।
2. पृ०सं० 31-32 पर देखिए।
3. पृ०सं० 34 पर देखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पृ०सं० 32 पर देखिए।
2. पृ०सं० 32 पर देखिए।
3. पृ०सं० 33 पर देखिए।
4. पृ०सं० 33 पर देखिए।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का जन्म बस्ती जिले के अगोना नामक ग्राम में सन् 1884 ई० में हुआ।
2. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।
3. मित्र बनाने की।
4. सच्चे मित्र को।
5. सच्चे मित्र में।
6. (i) मनुष्य को समय-समय पर प्रेरणा अच्छी संगत देती है।
   (ii) हम भी अच्छे बन जाते हैं।
   (iii) हमें सुख देती है।
   (iv) हमें आध्यात्मिक (पारलौकिक) चिंतन मिलता है।
   (v) हमें सुबुद्धि, परोपकारिता, सेवा, भलाई आदि भावनाएँ जागृत होती हैं।

व्याकरण एवं रचना बोध

1. युवावस्था, बाल्यावस्था, नीचाश्च, महात्मा, नाशोन्मुख, बिहार, हतोत्साहित, प्रत्येक, सहानुभूति, पुरुषार्थी।
2. (i) नीति का विशारद
   (ii) सत्य की निष्ठा
   (iii) राजा का दरबारी
   (iv) जीवन का निर्वाह
   (v) पथ का प्रदर्शक
   (vi) जीवन का संग्रह
   (vii) स्नेह का बंधन
3. **उपसर्ग** **शब्द**

उपसर्ग	शब्द
(i) प्रवृत्ति	प्र + वृत्ति
(ii) संकल्प	सं + कल्प
(iii) कुमार्ग	कु + मार्ग
(iv) सहानुभूति	सह + अनुभूति
(v) उच्चाशय	उच्च + आशय
(vi) कुसंग	कु + संग
(vii) निष्कलंक	निस् + कलंक
(viii) उज्जवल	उत् + ज्वल

4. **मूल शब्द**

(i) उपयुक्तता	उपयुक्त + ता
(ii) निपुणता	निपुण + ता
(iii) आनन्दमय	आनन्द + मय
(iv) चिन्ताशील	चिन्ता + शील
(v) सत्यनिष्ठ	सत्य + निष्ठ
(vi) बुद्धिमान	बुद्धि + मान
(vii) दुर्भाग्यवश	दुर्भाग्य + वश
(viii) ग्रन्थकार	ग्रन्थ + कार
(ix) सात्विक	सत्य + इक
(x) कलुषित	कलुष + इत
(xi) लड़कपन	लड़क + पन

5. **प्रत्यय**

इक—	धर्म + इक	धार्मिक
	मास + इक	मासिक
	वर्ष + ईक	वार्षिक
	सप्ताह + इक	साप्ताहिक
	परिवार + इक	पारिवारिक
इत—	मोह + इत	मोहित
	लिख + इत	लिखित

	प्रमाण + इत	प्रमाणित
	व्यथा + इत	व्यथित
	मुखर + इत	मुखरित
मय—	भक्ति + मय	भक्तिमय
	ममता + मय	ममतामय
	करुणा + मय	करुणामय
	आनन्द + मय	आनन्दमय
	जल + मय	जलमय
ई—	पहाड़ + ई	पहाड़ी
	जंगल + ई	जंगली
	देव + ई	देवी
	विदेश + ई	विदेशी
	ब्राह्मण + ई	ब्राह्मणी
कार—	साहित्य + कार	साहित्यकार
	पत्र + कार	पत्रकार
	चित्र + कार	चित्रकार
	संगीत + कार	संगीतकार
	शिल्प + कार	शिल्पकार

❖ ❖

2 ममता

–जयशंकर प्रसाद

(जीवन काल–सन् 1889–1937 ई.)

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पृ० सं० 38 पर देखिए।
2. पृ० सं० 40 पर देखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. ममता एक अनिंद्य सौन्दर्यमयी विधवा युवती है। ब्राह्मण होने के कारण उसके मन में धन के प्रति मोह लेशमात्र भी नहीं है। वह स्वाभिमानी भी है, त्याग करना और कष्ट सहना वह जानती है। उसमें भारतीय नारी के सभी गुण मौजूद हैं। ममता देश भक्त भी है। राष्ट्र प्रेम उसकी नसों में कूट-कूट कर भरा है। अपने पिता प्राप्त यवनों द्वारा दी गई रिश्वत की राशि को वह लौटा देने का आग्रह करती है। ममता यह जानते हुए भी कि उसके पिता की हत्या इन यवनों के हाथों हुई है, वह एक यवन आगंतुक को इसलिए शरण देती है कि हिन्दू धर्म में अतिथि 'देवोभव' कहा गया है। उसकी दूरदर्शिता उसकी बातों से स्पष्ट रूप में दृष्टिगोचर होती है। लोगों के प्रति प्रेम सेवा भावना तथा दूसरों के सुख-दुख समझने की भावना के कारण ही लोग उसका सम्मान करते हैं। वह आजीवन सबके सुख-दुख की सहभागिनी रही। उसकी इसी सेवा भावना के कारण उसके अंत समय में गाँव की स्त्रियाँ ममता की सेवा के लिए होड़ कर बैठी थीं।
2. ममता कहानी में कहानीकार ने एक अभावग्रस्त ब्राह्मणी के माध्यम से भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठ साधनाओं का आदर्श प्रस्तुत किया है। इस कहानी के माध्यम से प्रसाद जी अभावग्रस्त नारी की मनोव्यथा को भी वाणी देते ही हैं। वे भारतीय संस्कृति में दृढ़ विश्वास को भी उजागार करते हैं। प्रसाद जी की ममता नामक पात्र आजीवन कष्ट उठाने के लिए तत्पर हो जाती है लेकिन स्थितियों के साथ समझौता नहीं करती है।
3. ममता कहानी के अनुसार नारी के आदर्श, कर्त्तव्य पालन, त्याग, तपस्वी जीवन जीने जैसे गुणों को अपनाने की शिक्षा दी है।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. जयशंकर प्रसाद का जन्म सन् 1889 ई० में वाराणसी में हुआ।
2. राज्यश्री,स्कन्दगुप्त, अजातशत्रु, चन्द्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी।
3. ममता, रोहतास-दुर्ग के मंत्री चूड़ामणि की इकलौती पुत्री थी।
4. ममता की।
5. काशी के उत्तर में धर्म चक्र बिहार के खंडहरों में झोपड़ी बनाकर।
6. ममता पथिक को झोपड़ी में स्थान देकर स्वयं खण्डहरों में रहने लगी।

व्याकरण एवं रचना बोध

1.

(i) विधवा	सधवा	(ii) स्वस्थ	अस्वस्थ
(iii) सुख	दु:ख	(iv) स्वीकार	अस्वीकार
(v) प्राचीन	अर्वाचीन	(vi) अपमान	सम्मान

2.

उपसर्ग		**प्रत्यय**	
(i) दुश्चिन्ता	दुस् + चिन्ता	व्यथित	व्यथा + इत्
(ii) अनर्थ	अन् + अर्थ	पीलापन	पीला + पन
(iii) उपदेश	उप + देश	मन्त्रित्व	मन्त्रि + त्व
(vi) विरक्त	वि + रक्त	भारतीय	भारत + ईय
(v) अतिथि	अ + तिथि	पंचवर्गीय	पंचवर्ग + ईय
(vi) आजीवन	आ + जीवन	अनन्त	अन् + अन्त

3.

(i) बरसात—	वर्षा, बरखा	(ii) चन्द्रमा—	शशि, निशाचर
(iii) माता—	जननी, मातु	(iv) पक्षी—	द्विज, खग
(v) रात—	रात्रि, निशि		

4.

(i) निराश्रय—	निर् + आश्रय	(ii) दुश्चिन्ता—	दुस् + चिन्ता
(iii) पतनोन्मुख—	पतन + उन्मुख	(iv) भग्नावशेष—	भग्न + अवशेष
(v) दीपालोक—	दीप + आलोक	(vi) हताशा—	हत + आशा
(vii) अश्वारोही—	अश्व + आरोही		

5.

पद	**समास-विग्रह**	**समास का नाम**
कंटक-शयन	कंटकों पर शयन	सप्तमी तत्पुरुष
दुर्गपति	दुर्ग का पति	षष्ठी तत्पुरुष
अनर्थ	न अर्थ	नञ् तत्पुरुष
तृण-गुल्म	तृणों का गुल्म	षष्ठी तत्पुरुष
वंशाधर	वंश को धारण करने वाला है जो अर्थात् संतान	बहुब्रीहि
शीतकाल	शीत का काल	षष्ठी तत्पुरुष
आजीवन	जीवन के रहने तक	अव्ययीभाव
अनन्त	न अंत	नञ् तत्पुरुष
अष्टकोण	अष्ट कोणों का समूह	द्विगु समास

❖❖

3 भारतीय संस्कृति

—डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

(जीवन काल—सन् 1884–1963 ई.)

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पृ०सं० 43 पर देखिए।
2. पृ०सं० 46 पर देखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पृ०सं० 43 पर देखिए।
2. पृ०सं० 43 पर देखिए।
3. पृ०सं० 46 पर देखिए।
4. भारतीय संस्कृति का मूल आधार है—
   (i) आध्यात्मिक और भौतिकता का समन्वय
   (ii) अनेकता में एकता
   (iii) ग्रहणशीलता
   (iv) प्राचीनता
   (v) वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना।
5. भारतीय संस्कृति की विशेषता क्या है—
   (i) सभ्य संचार, मान्यताएँ, मूल्य, शिष्टाचार और अनुष्ठान
   (ii) अनेकता में एकता
   (iii) वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना
   (iv) लोक हित तथा विश्व कल्याण

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. डॉ०राजेन्द्र प्रसाद का जन्म बिहार प्रांत के छपरा जिल के जीरादेई नामक ग्राम में सन् 1884 ई० में हुआ था।
2. गाँधी की देन, भारतीय शिक्षा, साहित्य शिक्षा और संस्कृति, मेरी आत्मकथा, बापू के कदमों में, मेरी यूरोप यात्रा, इण्डिया डिवाइडेड, चम्पारन में महात्मा गाँधी, खादी का अर्थशास्त्र, संस्कृति का अध्ययन।
3. हाँ, भारतीय संस्कृति आज भी अपना अस्तित्व कायम किए हुए है।
4. डॉ०राजेन्द्र प्रसाद की मृत्यु सन् 1963 में हुई।
5. भारतीय संस्कृति का मुख्य आधार अनेकता में एकता है।

व्याकरण एवं रचना बोध

शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय
नैतिक	नीति	इक
वैज्ञानिक	विज्ञान	इक
औद्योगिक	उद्योग	इक
बौद्धिक	बुद्धि	इक
ऐतिहासिक	इतिहास	इक
सामूहिक	समूह	इक
प्रादेशिक	प्रदेश	इक
साहित्यिक	साहित्य	इक

मूल शब्द में 'इक' प्रत्यय के जुड़ने पर शब्द के प्रथम वर्ण में निम्नवत् परिवर्तन होता है—

(i) अ—आ (ii) इ या ई—ए (iii) उ या ऊ—औ

शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द
अत्याचार	अति	आचार
उपार्जन	उप	अर्जन
उपयोग	उप	योग
प्रत्येक	प्रति	एक
परिश्रम	परि	श्रम
आदान	आ	दान

3.

शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द	प्रत्यय
विभिन्नता	वि	भिन्न	ता
सुशोभित	सु	शोभा	इत
प्रस्फुटित	प्र	स्फुट	इत
प्रोत्साहित	प्र	उत्साह	इत
अहिंसात्मक	अ	हिंसा	आत्मक
प्रतिनिधित्व	प्रति	निधि	त्व
प्रदर्शित	प्र	दृश	इत

4. पूर्वक— प्रेमपूर्वक, शांतिपूर्वक, विचारपूर्वक, नियमपूर्वक, विनयपूर्वक
   त्व— बन्धुत्व, कवित्व, प्रभुत्व, महत्व, मनुष्यत्व
   प्रद— लाभप्रद, भयप्रद, हानिप्रद, लोभप्रद, कल्याणप्रद
   ईय— आत्मीय, नगरीय, जातीय, मानवीय, भारतीय
   आत्मक— प्रश्नात्मक, विचारात्मक, भावात्मक, व्यंग्यात्मक, आलोचनात्मक
   जन्य— द्वेषजन्य, क्रोधजन्य, भावजन्य, परिणामजन्य, आवेशजन्य
5. नैतिक— नीति + इक
   अत्याचार— अति + आचार
   उपयोग— उप + योग
   प्रत्येक— प्रति + एक

❖❖

4

अजन्ता

—भगवतशरण उपाध्याय

(जीवन काल—सन् 1910–1982 ई.)

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पृ०सं० 50 पर देखिए।
2. पृ०सं० 52 पर देखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पृ०सं० 50 पर देखिए।
2. पृ०सं० 50 पर देखिए।
3. पृ०सं० 52 पर देखिए।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भगवत शरण उपाध्याय का जन्म बलिया जिले के अन्तर्गत उजियारीपुर ग्राम में सन् 1910 में हुआ था।
2. भगवत शरण उपाध्याय की मृत्यु सन् 1982 में हुई।
3. एक हाथ में कमल लिये बुद्ध खड़े हैं, जैसे छवि छलकी पड़ती है, उभरे नयनों की जोत पसरती जा रही है और यह यशोधरा है, वैसे ही कमल नाल धारण किये त्रिभंग में खड़ी।
4. अजंता के पहाड़ी जंगलों में बुद्ध का संसार उतर पड़ा है।

व्याकरण एवं रचना बोध

1.

शब्द	उपसर्ग	शब्द
सन्देश	सत्	देश
अभिराम	अभि	राम
सनाथ	स	नाथ
विहँस	वि	हँस
बेरहमी	बे	रहमी
अद्वितीय	अ	द्वितीय

2.

अति—	अतिरिक्त, अत्याचार, अतिक्रमण
उप—	उपनाम, उपवन, उपकार
सु—	सुमार्ग, सुकर्म, सुधार
वि—	विज्ञान, वियोग, विषाद
परि—	परिजन, परिणाम, परिपूर्ण
अ—	अविश्वास, अद्वितीय, असुविधा

3. (i) कला—कलावन्त—कला की उपासना को कलावन्त अपना धर्म मानते हैं।
(ii) हैवान—हैवानी—हैवान की हैवानी के सम्मुख सभी विवश हो जाते हैं।
(iii) इंसान—इंसानियत—इंसान को कभी भी इंसानियत नहीं छोड़नी चाहिए।
(iv) सुरक्षा—सुरक्षित—कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बावजूद प्रधानमंत्री जी सुरक्षित नहीं रह सके।
(v) कल्याण—कल्याणकर—केवल कल्याणकर योजनाएँ बनाकर ही समाज का कल्याण नहीं हो सकता।

4.

अभिराम—	अभि + राम
सनाथ—	स + नाथ
इंसानियत—	इंसान + इयत
चित्रकला—	चित्र + कला
गतिमान—	गति + मान

❖❖

5 क्या लिखूँ

—पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी

(जीवन काल—सन् 1894–1971 ई.)

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पृ०सं० 55 पर देखिए।
2. पृ०सं० 57-58 पर देखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पृ०सं० 55 पर देखिए।
2. पृ०सं० 55 पर देखिए।
3. पृ०सं० 57 पर देखिए।
4. पृ०सं० 57 पर देखिए।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'क्या लिखूँ' निबन्ध विद्या की रचना है।
2. नमिता और अमिता को लेखक से यह अपेक्षा है कि वह 'दूर के ढोल सुहावने' तथा समाज-सुधार पर निबन्ध लिखकर दे।
3. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी ने लिखा है।
4. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी का जन्म सन् 1894 ई० में छत्तीसगढ़ के खेरागढ़ नामक स्थान पर हुआ था।
5. अंजलि, अलमला कहानी संग्रह हैं, तथा बिखरे पन्ने, कुछ यात्री, प्रबंध परिजात, पद्भवन, पंच-पात्र, तीर्थ रेणु निबन्ध संग्रह हैं।

व्याकरण एवं रचना बोध

1. निबन्ध— नि + बंध
   सम्मति— सम् + मति
   अभिव्यक्ति— अभि + व्यक्ति
   लज्जाशील— लज्जा + शील

2.

शब्द	**उपसर्ग**	**दो अन्य शब्द**
सम्मति	सम्	संशय, संकल्प
निबन्ध	नि	निडर, निवास
वि	वि	विज्ञान, विशेष
दुर्बोध	दुर्	दुर्बल, दुराचार
अभिव्यक्ति	अभि	अभियोग, अभिकरण

3.

शब्द	**प्रत्यय**	**दो अन्य शब्द**
शीर्षक	अक	पाठक, लेखक
विद्वता	ता	महत्ता, निर्बलता
प्रतिभावान	वान	दयावान, धनवान
लज्जाशील	शील	विनयशील, विचारशील
समीपस्थ	स्थ	निकटस्थ, दूरस्थ
सुखद	द	जलद, दु:खद

4. (i) आवेश—क्रोध के आवेश में मनुष्य को कुछ नहीं सूझता।
   (ii) विश्वकोश—विश्वकोश को सर्वाधिक प्रमाणिक सन्दर्भ ग्रंथ माना जाता है।
   (iii) गाम्भीर्य—आचार्य हजारीप्रसाद का विचार गाम्भीर्य उनकी शैली को एक नया रूप प्रदान करता है।
   (iv) कर्कशता—वाणी की कर्कशता के कारण ही कौवे को सम्मान नहीं मिलता।
   (v) विषाद—साधुजन हर्ष-विषाद से मुक्त होते हैं।
   (vi) दूरस्थ—मैं अपने दूरस्थ रिश्तेदारों से बहुत कम मिल पाता हूँ।

❖❖

6 ईर्ष्या, तू न गई मेरे मन से

—रामधारी सिंह 'दिनकर'

(जीवन काल—सन् 1908–1974 ई.)

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पृ०सं० 61 पर देखिए।
2. पृ०सं० 63-64 पर देखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पृ०सं० 61 पर देखिए।
2. पृ०सं० 61 पर देखिए।
3. पृ०सं० 61 पर देखिए।
4. पृ०सं० 62 पर देखिए।
5. पृ०सं० 62 पर देखिए।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म 30 सितम्बर, सन् 1908 में बिहार के मुंगेर जिले के सिमरिया घाट नामक ग्राम में हुआ था।
2. अर्द्धनारीश्वर, मिट्टी की ओर, रेती के फूल, बट-पीपल, उजली आग, संस्कृति के चार अध्याय।
3. ईर्ष्या, तू न गई मेरे मन से यह दिनकर की रचना हमारे पाठ्यक्रम में है।
4. जिस मनुष्य के हृदय में ईर्ष्या घर बना लेती है, वह उन चीजों से आनन्द नहीं उठाता, जो उसके पास मौजूद हैं, बल्कि उन वस्तुओं से दु:ख उठाता है, जो दूसरों के पास हैं।
5. जिसे किसी प्रचंड चिन्ता ने पकड़ लिया है, उस बेचारे की जिन्दगी खराब हो जाती है इसलिए चिन्ता को चिता कहा है।

व्याकरण एवं रचना बोध

1.

शब्द	**उपसर्ग**	**मूल शब्द**
अत्यंत	अति	अंत
दरअसल	दर	असल
निमग्न	नि	मग्न
निर्मल	निर्	मल
साकार	स	आकार
अपव्यय	अप	व्यय
समकक्ष	सम	कक्ष
दुर्भावना	दुर्	भावना
अनुशासन	अनु	शासन

2.

शब्द	**मूल शब्द**	**प्रत्यय**
ईर्ष्यालु	ईर्ष्या	आलु
लाभदायक	लाभ	दायक
मौलिक	मूल	इक
रचनात्मक	रचना	आत्मक
समकालीन	समकाल	ईन
अहंकार	अहम्	कार

3. (i) प्रतिद्वन्द्वी-प्रतिद्वन्द्विता—स्वस्थ प्रतिद्वन्द्वता उसे ही कहा जा सकता है, जिसमें प्रतिद्वन्द्वी एक-दूसरे से ईर्ष्या न करते हों।
(ii) मूर्ति-मूर्त—मूर्तिकार अपनी कल्पना को अपनी मूर्ति में मूल रूप प्रदान करता है।
(iii) जिज्ञासा-जिज्ञासु—अपनी जिज्ञासा शांत करने के लिए जिज्ञासु पता नहीं कहाँ-कहाँ मारा-मारा फिरता है।
(iv) चरित्र-चारित्रिक—समाज के चारित्रिक विकास के लिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने चरित्र को पवित्र बनाये रखना चाहिए।

4.

निर्मल—	निर् + मल
साकार—	स + आकार
अनुशासन—	अनु + शासन
दुर्भावना—	दुर् + भावना
ईर्ष्यालु—	ईर्ष्या + आलु

❖❖

7

पानी में चंदा और चाँद पर आदमी

—जयप्रकाश भारती

(जीवन काल—सन् 1936–2005 ई.)

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पृ०सं० 67 पर देखिए।
2. पृ०सं० 69-70 पर देखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पृ०सं० 67 पर देखिए।
2. पृ०सं० 67 पर देखिए।
3. पृ०सं० 67 पर देखिए।
4. पृ०सं० 70 पर देखिए।
5. पृ०सं० 70 पर देखिए।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. जयप्रकाश भारती का जन्म सन् 1936 में मेरठ (उत्तर प्रदेश) में हुआ।
2. 21 जुलाई, सन् 1969 को अंतरिक्ष का सूत्रपात हुआ।
3. 21 जुलाई, सन् 1969 को मानव ने चन्द्रमा पर अपने कदम पहली बार रख थे।
4. जयप्रकाश भारती की मृत्यु सन् 2005 में हुई।

व्याकरण एवं रचना बोध

	शब्द	समास-विग्रह	समास का नाम
1.	चन्द्रतल	चन्द्र का तल	षष्ठी तत्पुरुष
	त्रिपाद	तीन पदों का समूह	द्विगु
	मरणोपरान्त	मरण के उपरान्त	षष्ठी तत्पुरुष
	चन्द्रमुखी	चन्द्रमा के समान मुख वाली है जो	बहुब्रीहि
	रजनीपति	रजनी (रात्रि) का पति	षष्ठी तत्पुरुष
	प्राणोदक	प्राण रूपी उदक	कर्मधारय
	प्रयोगशाला	प्रयोग के लिए शाला	चतुर्थी तत्पुरुष

2.	अस्ति	अस्तित्व
	स्थापना	स्थापत्य
	दुर्घटना	दुर्घटनाग्रस्त
	काल	कालीन
	प्रक्षेपण	प्रक्षेपणीय
	स्थगन	स्थगित

3.		उपसर्ग	मूल शब्द
	बदसूरत	बद	सूरत
	दुस्साहस	दुस्	साहस
	प्रधान	प्र	धान
	अनुसंधान	अनु	संधान
	प्रयोग	प्र	योग
	विशेष	वि	शेष

4. सर्वाधिक—सर्व + अधिक—दीर्घ संधि—अ + अ = आ
मरणोपरान्त—मरण + उपरान्त—गुण संधि—अ + उ = ओ
दुस्साहस—दुः + साहस—विसर्ग संधि—विसर्ग + स = सा
पूर्वाभिनय—पूर्व + अभिनय—दीर्घ संधि—अ + अ = आ
शयनागार—शयन + आगार—दीर्घ संधि—अ + अ = आ
प्राणोदक—प्राण + उदक—गुण संधि—अ + उ = ओ

❖❖

1

पद

–सूरदास

(जीवन काल–सन् 1478–1583 ई.)

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पृ०सं० 72 पर देखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पृ०सं० 72 पर देखिए।
2. पृ०सं० 72-73 पर देखिए।
3. पृ०सं० 73 पर देखिए।
4. पृ०सं० 73 पर देखिए।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. सूरदास का जन्म सन् 1478 ई० में रुनकता में हुआ था।
2. सूरदास की भक्ति दास्य भाव की थी।
3. सूरसागर, सूरसारावली तथा साहित्य लहरी।
4. सन् 1583 ई० के लगभग सूरदास की मृत्यु हुई।

काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण बोध

1. (क) चरण-कमल बंदौ हरि राइ ये रुपक अलंकार।
(ख) करि-करि प्रतिपद प्रतिमनि बसुधा, कमल बैठति साजति–अनुप्रास एवं पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार।
(ग) जोइ-जोइ माँगत सोइ-सोइ देती, क्रम-क्रम करि के न्हाते। अनुप्रास एवं पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार।
लक्षण–उपर्युक्त अलंकार में से रुपक एवं अनुप्रास के लक्षण 'काव्य-सौन्दर्य' के तत्वों के अन्तर्गत देखे।
पुनरुक्ति प्रकाश–जब एक ही शब्द की लगातार पुनरावृत्ति होती है, तब वहाँ पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार होता है 'ख' में करि-करि।
अनुप्रास अलंकार–जहाँ एक वर्ण की आवृत्ति बार-बार होती है वहाँ अनुप्रास अलंकार है।
2. किलकत कान्ह धुटुरुवनि आवत
मनिमय कनक, नंद कै आँगन,
बिम्ब पर करिबै घावत॥
कबहुँ निराख हरि आपु छाँह कौ,
कर सौ परकन चाहत।
किलकि हँसत राजत है दतियाँ,
पुनि-पुनि निहि अवगाहत॥
कनक-भूमि पर कर-पग छाया,
यह उपमा इक राजति।
करि-करि प्रतिपद प्रतिमान वसुधा,
कमल बैठ की साजाति॥
बाल-दसा-सुख-निरखि जशोदा
पुनि-पुनि नन्द बुलावति।
3. (क) वियोग श्रृंगार रस
(ख) श्रृंगार रस
(ग) रौद्र रस
4. तत्सम–पंगु, गृह, करि, जननी, ग्वाल, बिम्ब, यति, विधु।
तद्भव–चरन, आँचल, नैन, पानि, सखा,जोग, इंडी।
देशज–कान्ह, साँच, छोटा, गाँसी, धाइ, टेव, अलक-लड़लो, ठाढे।

❖❖

2 धनुष भंग, वन–पथ पर

–तुलसीदास

(जीवन काल–सन् 1532–1623 ई.)

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पृ०सं० 77-78 पर देखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पृ०सं० 77-78 पर देखिए।
2. पृ०सं० 78 पर देखिए।
3. तुलसीदास समन्वयवादी कवि हैं। उनके काव्य में ज्ञान, भक्ति और कर्म, व्यक्ति और समाज, भाषा व सिद्धांतों का समन्वय हुआ है। इस समन्वय की भावना के कारण तुलसी भारत के लोक नायक का पद प्राप्त कर सके। उदाहरणार्थ–
   सम्प्रदायों का समन्वय–तुलसी के युग में विष्णु, शिव और शक्ति तीनों की पूजा की जाती थी। तीनों सम्प्रदायों के नायक एक-दूसरे के विरोधी थे। 'रामचरितमानस' में तुलसी ने तीनों सम्प्रदायों का समन्वय किया है। शिव पार्वती को राम-कथा सुनाते हैं तथा तुलसी ने राम से कहलवाया है–"सिव द्रोही मम दास कहावा, सो नर मोहि सपनेहुँ नहिं पावा।
4. पृ०सं० 77 पर देखिए।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. तुलसीदास का जन्म सन् 1532 ई० में बाँदा जिले में राजापुर ग्राम में हुआ था।
2. तुलसीदास के पिता का नाम आत्माराम दुबे था।
3. रामचरितमानस, विनय-पत्रिका, कवितावली, गीतावली, दोहावली, बरवै रामायण, पार्वती मंगल, जानकी मंगल, वैराग्य संदीपनी, रामलला नहहू।
   सन् 1623 ई. में तुलसीदास की मृत्यु हुई।

काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण बोध

1. (i) अनुप्रास तथा अतिशयोक्ति अलंकार धनुष टूटने के बाद की स्थिति का अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णन किया गया है।
   भरे भुवन में अनुप्रास अलंकार है।
   (ii) 'सुनि सुन्दर केन, सुधारस माने, सयानी है, जानकी जानी भली में अनुप्रास अलंकार है क्योंकि यहाँ वर्ण की आवृत्ति हो रही है।
   अनुराग–तड़ाग में भानु उदै बिगसी मनो मंजुल कंज-कली में रुपक, उत्प्रेक्षा तथा अनुप्रास अलंकार है, क्योंकि यहाँ तुलना, समता तथा वर्णों की आवृत्ति है।
2. (i) श्रृंगार रस–रति
   (ii) अद्‌भुत रस–आश्चर्य
3. 'वन पथ पर' कविता सवैया छन्द में लिखी गई है। बाइस से छब्बीस तक के वर्णवृत्त 'सवैया' कहलाते हैं। मत्तगयन्द छन्द तथा सुन्दरी इसके भेद हैं।
4.

समस्त पद	समास विग्रह	समास का नाम
पद कमल	पदरूपी कमल	कर्मधारण
चारिभुज–	चार भुजाएँ है जिसकी अर्थात् विष्णु	बहुब्रीहि
सुलोचनि–	सुन्दर लोचन वाली है जो अर्थात् सीता	बहुब्रीहि
मखशाला–	मख (यज्ञ) के लिए शाला	चतुर्थी तत्पुरुष
त्रिभुवन–	त्रि (तीनों) भवनों का समूह	द्विगु
दसबदन–	दस बदन (मुख) हैं जिसके अर्थात् रावण	बहुब्रीहि
रामलषन–	राम और लषन (राम और लक्ष्मण)	द्वन्द्व।

❖❖

3 सवैये, कवित्त

—रसखान

(जीवन काल—सन् 1548–1628 ई.)

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पृ० सं० 84 देखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पृ० सं० 84 पर देखिए।
2. पृ० सं० 84 पर देखिए।
3. पृ० सं० 85 पर देखिए।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. रसखान का जन्म सन् 1558 ई. में दिल्ली में हुआ था।
2. सुजस-रसखान और प्रेमवाटिका।
3. रसखान की मृत्यु सन् 1618 ई० में हुई।

काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण बोध

1. (i) रस वात्सल्य, स्थायी भाव—स्नेह (रति)
   (ii) रस-श्रृंगार, स्थायी भाव—रति।
2. (i) अनुप्रास—'क' वर्ण की आवृत्ति के कारण अनुप्रास अलंकार है। प्रतीप "वारत कामकला निज कोटी" यहाँ कृष्ण में सौन्दर्य को देखकर कामदेव स्वयं अपनी करोड़ों कलाएँ निछावर कर रहा है। उपमान को उपमेय बना देने का कारण यहाँ प्रतीप अलंकार है।
   (ii) अनुप्रास,यमक—'म','घ', 'र' वर्णों की आवृत्ति के कारण अनुप्रास तथा एक 'अधरान' का अर्थ 'होठों पर' एवं दूसरे 'अधरान' का अर्थ होठों पर नहीं होने के कारण यमक है।
   (iii) श्लेष—यहाँ 'रसखानि री' के दो अर्थ-रस की खान श्रीकृष्ण तथा कवि रसखान है अत: इसमें श्लेष है।
3. सवैये और कवित्त का लक्षण
   सवैया—बाइस से छब्बीस तक के वर्णवृत्त सवैया कहलाते हैं। (उदाहरण के लिए पाठ छात्र स्वयं देखें)।
   कवित्त—यहाँ दण्डक वृत्त है। इसमे प्रत्येक चरण में 31 वर्ण होते हैं। 16-15 वर्णों पर यति होती है। अन्त में एक गुरु वर्ण होता है। इसे मनहरण कवित्त भी कहते हैं।
   (उदाहरण पाठ में छात्र स्वयं देखें)

शब्द	**खड़ी बोली के रूप**	**शब्द**	**खड़ी बोली के रूप**
करोर	करोड़	काग	कौआ
सिगरी	सभी	अँगुरी	अँगुली
दुति	द्युति	भाजति	भागती
लकुटी	लाठी	संजम	संयम

❖❖

4 भक्ति, नीति

–बिहारी लाल

(जीवन काल–सन् 1603–1663 ई.)

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पृ० सं० 88 पर देखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पृ० सं० 88 पर देखिए।
2. पृ० सं०88 पर देखिए।
3. पृ० सं० 88 पर देखिए।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. बिहारी जी का जन्म सन् 1603 ई० के लगभग मध्य प्रदेश के ग्वालियर जिले के बसुआ गोविन्दपुर में हुआ था।
2. सतसई।
3. 719 दोहे।
4. सन् 1663 ई० में बिहारी जी की मृत्यु हुई।

काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण बोध

1. (i) **श्लेष अलंकार**—क्योंकि जब एक ही शब्द के अनेक अर्थ निकलते हैं, वहाँ श्लेष अलंकार होता है। यहाँ हरित शब्द के दो अर्थ हैं—हरा रंग और प्रसन्न होना। अत: यहाँ श्लेष अलंकार है।

   (ii) **विरोधाभास**—यहाँ विरोध का आभास होने से विरोधाभास अलंकार है।

   (iii) **श्लेष अलंकार**—यहाँ स्याम रंग के दो अर्थ हैं—काला रंग और कृष्ण।

   (iv) **उपमा ,दीपक, श्लेष**—जे तो नीचौ..ऊँचौ दृष्टि में विरोधाभास होने से उपमा, दो वस्तुओं (नत, नीर और नर) का एक समान धर्म होने के कारण दीपक तथा 'गति', 'नीचो', ऊँचौ, में दो अर्थ होने के कारण श्लेष अलंकार है।

3. कर लै सँघि सराहि, हुँ, रहे सबै गहि मौनु।
   गंधी गंध गुलाब कौ, गँवई गाहकु कौनु॥

समस्त पद	**समास विग्रह**	**समास का नाम**
पीतु पटु	पीलावस्त्र	कर्मधारय
नीलमनि	नीलीमणि	कर्मधारय
मन-सदन	मनरूपी सदन	कर्मधारय
दुपहर	दोपहर का समय	द्विग
रवि-चन्द	रवि और चन्द्र	द्वन्द्व
समूह	मूल के साथ	अव्ययीभाव

❖❖

5

स्वदेश–प्रेम

–पं. रामनरेश त्रिपाठी

(जीवन काल–सन् 1889–1962 ई.)

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पृ सं० 93 पर देखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पृ० सं० 93 पर देखिए।
2. स्वदेश–प्रेम कविता का सार
   देश प्रेम कविता में कवि भारतवासियों से कहता है कि हम उस देश के वासी हैं जहाँ सभी लोग देश से प्रेम करते हैं क्योंकि यहाँ की धरती सुख–समृद्धि से युक्त समस्त, वैभवों से परिपूर्ण तथा स्वर्ग से भी बढ़कर है।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. रामनरेश त्रिपाठी का जन्म सन् 1889 ई० में जौनपुर के कोहरीपुर गाँव में हुआ था।
2. लक्ष्मी (उपन्यास), कविता संग्रह -मानसी नाटक-प्रेमलोक, कहानी संग्रह-स्वप्नों के चित्र।
3. रामनरेश त्रिपाठी की मृत्यु सन् 1962 में हुई।

काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण बोध

1. **वीर रस**—जब काव्य में उमंग, उत्साह, और पराक्रम से सम्बन्धित भाव का उल्लेख होता है, वहाँ वीर रस की उत्पत्ति होती है।
2. (i) मृत्यु एक है, विश्राम स्थल तथा मृत्यु एक सरिता है में रूपक अलंकार है। रुपक अलंकार में उपमेय में उपमान का निषेधरहित आरोप होता है।
   (ii) 'स्वर्ग–सी सुखद' में उपमा अलंकार है। उपमा अलंकार में उपमेय और उपमान में स्पष्ट और सुन्दर समानता दिखाई देती है।
3.

समस्त पद	**समास विग्रह**	**समास का नाम**
अचर	नचर (न चलने वाला)	नञ् तत्पुरुष
परीक्षा–स्थल	परीक्षा का स्थल	षष्ठी तत्पुरुष
देश–जाति	देश और जाति	द्वन्द्व
गिरि–वर	गिरि में श्रेष्ठ वर	सप्तमी तत्पुरुष
चरण–चिन्ह	चरणों के चिन्ह	षष्ठी तत्पुरुष
शत्रुंजय	शत्रु को जयकर लिया है	बहुब्रीहि

4.

देश–प्रेम	–	देश+ प्रेम
निर्भय	–	निर् + भय
स्वागत	–	सु + आगत
निर्भर	–	निर् + भर

❖❖

6 भारत माता का मंदिर यह

–मैथिलीशरण गुप्त

(जीवन काल–सन् 1886–1964 ई.)

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पृ० सं० 98 पर देखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पृ० सं० 98 पर देखिए।
2. 'भारत माता का मन्दिर यह' इस कविता में भारत माता का मन्दिर भारतीय समृद्धि, साहस और भावना का प्रतीक है, जो सभी भारतीयों के दिल में बसता है। यहाँ के लोगों के बीच एकता, धर्म और सांस्कृतिक समृद्धि के संकेत हैं। भारत माता का मन्दिर न केवल एक धार्मिक स्थल है बल्कि यह भारत की एकता और विविधता का प्रतीक है, जो भारतीय समाज में है।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. मैथिलीशरण गुप्त का जन्म सन् 1886 ई० में हुआ।
2. भारत-भारती, रंग में भंग, जयद्रथ वध, पंचवटी, झंकार, साकेत, यशोधरा, द्वापर, जयभारत, विष्णु प्रिया।
3. मैथिलीशरण गुप्त की मृत्यु सन् 1964 ई० में हुई।

काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण बोध

1. (i) अनुप्रास अलंकार (ii) रूपक अलंकार

2.

		मूल शब्द	प्रत्यय
समता	–	सम्	+ ता
संस्कृति	–	संस्कृत	+ इ
पुजारी	–	पूजा	+ आरी।

3.

शब्द	सन्धि विच्छेद	सन्धि का नाम
संवाद	सम् + वाद	व्यंजन सन्धि
सम्मान	सम् + मान	व्यंजन सन्धि
पवित्र	पो + इत्र	अयादि सन्धि

4.

शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द
संवाद	सं	वाद
सम्मान	सम्	मान
संप्रदाय	सम्	प्रदाय

❖❖

7

हिमालय से, वर्षा सुन्दरी के प्रति

—महादेवी वर्मा

(जीवन काल—सन् 1907–1987 ई.)

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पृ० सं० 101 पर देखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पृ० सं० 101 पर देखिए।
2. पृ० सं० 101-102 पर देखिए।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 में हुआ था।
2. महादेवी वर्मा का जन्म फर्रुखाबाद में हुआ था।
3. नीहार, रश्मि, नीरजा, यामा, सांध्यगीत, दीपशिखा।

काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण बोध

1. (i) विरोधाभास अलंकार
   (ii) रूपक तथा पुनरुक्तिप्रकाश

2.

पद	मूलशब्द	उपसर्ग	प्रत्यय
गर्वित	गर्व	—	इत
विरक्त	रक्त	वि	—
दुमूल	मूल	दु	—
मलयज	मलय	—	ज
सम्मित	स्मित	स	—

3.

स्वर्णरश्मि	स्वर्ण की रश्मि	षष्ठी तत्पुरुष
हिमनिधान	हिम का निधान	षष्ठी तत्पुरुष
सजल	जल सहित	अव्ययीभाव
अनन्त	न अन्त	नञ तत्पुरुष
ऋतुराज	ऋतुओं का राजा	षष्ठी तत्पुरुष

4.

स्वर्ण रश्मि	—	स्वर्ण + रश्मि
हिमनिधान	—	हिम + निधान
सजल	—	स + जल
अनन्त	—	अन् + अन्त
विरक्त	—	वि + रक्त

❖❖

8

चींटी, चन्द्रलोक में प्रथम बार

–सुमित्रानन्दन पन्त

(जीवन काल–सन् 1900–1977 ई.)

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पृ० सं० 106 पर देखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पृ० सं० 106 पर देखिए।
2. पृ० सं० 106 पर देखिए।
3. पृ० सं० 107 पर देखिए।
4. पृ० सं० 107 पर देखिए।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. सुमित्रानन्दन पन्त का जन्म 20 मई सन् 1900 को अल्मोड़ा जिले के अन्तर्गत कोसानी ग्राम में हुआ था।
2. सुमित्रानन्दन पन्त की मृत्यु सन् 1977 ई० में हुई।
3. वीणा, पल्लव, ग्रन्थि, गुंजन, युगान्त, युगवाणी।
4. चींटी से हमें परिश्रम करने की प्रेरणा मिलती है।
5. चन्द्रलोक पर पहली बार मानव गया था।

काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण बोध

1. (i) उपमा, अनुप्रास, पुनरुक्ति प्रकाश
   (ii) उपमा
   (iii) अनुप्रास
2.

शब्द	**उपसर्ग**	**मूलशब्द**
सुनागरिक	सु	नागरिक
अक्षय	अ	क्षय
समारम्भ	सम्	आरम्भ
उपग्रह	उप	ग्रह

3.

शब्द	**मूलशब्द**	**प्रत्यय**
सामाजिक	समाज	इक
छोटापन	छोटा	पन
पौराणिक	पुराण	इक

4.

शब्द	**उपसर्ग**	**मूलशब्द**
पुरातन	पुरा	तन
सुनागरिक	सु	नागरिक
विचरण	वि	चरण

❖❖

9 पुष्प की अभिलाषा, जवानी

–माखनलाल चतुर्वेदी

(जीवन काल–सन् 1889–1968 ई.)

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पृ० सं० 110 पर देखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पृ० सं० 110 पर देखिए।
2. पृ०सं० 111 पर देखिए।
3. जवानी कविता के माध्यम से कवि भारतीय नौजवान युवकों को देशप्रेम के लिए प्रेरित करते हुए उन्हें मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राणों को बलिदान करने के लिए कहना चाहता है। वह देश की युवा शक्ति में उत्साह का संचार करते हुए उसे देशोत्थान के कार्यों में प्रवृत्त होने के लिए प्रेरित करता है। जिससे कि यह युवा शक्ति देश की परिस्थितियों को बदल सके।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म सन् 1889 में मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले में बाबई ग्राम में हुआ था।
2. माखन लाल चतुर्वेदी की मृत्यु सन् 1968 में हुई।
3. कृष्णार्जुन, युद्ध, हिमकिरीटनी, हिमतरंगिनी, माता, युग-चरण, समर्पण, वेणु तो गूँजे धारा।

काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण बोध

1. 'जवानी' कविता का वास्तविक सौन्दर्य उसकी ओज-पूर्ण शब्द-शैली से ही प्रस्फुटित हुआ है। शब्दों का आघात इतना तीव्र है कि निष्प्राण-सा व्यक्ति भी उत्साह में आकर कुछ कर गुजरने के लिए तत्पर हो जाये। निम्नलिखित पंक्तियाँ भला किसके जीवन में उत्साह का संचार नहीं कर सकती–

   दो हथेली हैं कि पृथ्वी गोल कर दे ?
   री मरण के मोल की चढ़ती जवानी।
   धरा ! यह तरबूज है दो फाँक कर दें ?
   लाल चेहरा है नहीं पर लाल किसके ?
   खून हो जाये न तेरा देख, पानी।

2. (i) इरादों की उच्चता से हथेलियों की समानता करने के कारण उपमा अलंकार है।

   (ii) प्रथम 'लाल' शब्द का अर्थ लाल रंग, तथा द्वितीय 'लाल' शब्द का अर्थ पुत्र है, अत: यहाँ यमक अलंकार है।

3. (i) मसलकर अपने इरादों-सी उठाकर,
   दो हथेली हैं कि पृथ्वी गोली कर दे॥

   (ii) लाल चेहरा है नहीं–पर लाल किसके।

4. (i) पृथ्वी गोल करना–यदि व्यक्ति मन में ठान ले तो वह अपने हाथों से मसलकर पृथ्वी को गोल कर सकता है।

   (ii) नसों में पानी होना–किसी भी देश को हमसे टकराने से पहले यह सोच लेना चाहिए कि हमारी नसों में पानी नहीं बहता।

   (iii) चरण चाटना–चरण चाटकर खाने से अच्छा तो सम्मान के साथ मरना है।

   (iv) प्रलय के सपने आना–हम चुप हैं इसका मतलब यह नहीं हम कमजोर हैं, हमें भी प्रलय के सपने आते हैं, यही पड़ोसी राष्ट्र को भली प्रकार समझ लेना चाहिए।

   (v) माई का लाल–हमारे देश में देश के लिए कुर्बानी देने वाले अनेक माई के लाल हैं।

   (vi) कायाकल्प होना–स्वतन्त्रता मिलने से देश का कायाकल्प हो गया।

   (vii) खून का पानी–दुश्मनों का खून पानी हो गया है तभी तो पीछे से वार करते हैं।

❖❖

10 झाँसी की रानी की समाधि पर

—सुभद्राकुमारी चौहान

(जीवन काल—सन् 1904–1948 ई.)

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. प्र०सं० 114 पर देखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. रानी लक्ष्मीबाई ने वीर मर्दों अर्थात् योद्धाओं की तरह अंग्रेजों से युद्ध किया, अत्यधिक वीरता दिखाकर झाँसी की रक्षा करने का प्रयास किया। इसलिए सुभद्रा जी ने रानी लक्ष्मीबाई को मर्दानी कहा है।
2. सुभद्रा कुमारी चौहान के काव्य का मूल स्वर राष्ट्रीय है और उसमें राष्ट्रीयता के सम्पोषण तथा स्वतंत्रय चेतना जगाने में समस्त उपादानों का प्रयोग किया है।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. सुभद्रा कुमारी चौहान छायावादी युग की कवियित्री है।
2. सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद जिले में सन् 1904 को हुआ था।
3. मुकुल (काव्य-संग्रह), उन्मादिनी तथा बिखरे मोती (कहानी-संग्रह)।
4. सुभद्रा कुमारी चौहान की मृत्यु सन् 1948 को हुई।

काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण बोध

1. (क) अनुप्रास, रुपक और पुनरुक्ति प्रकाश

   (ख) उपमा

   अनुप्रास का लक्षण—एक ही वर्ण की आवृत्ति दो या दो से अधिक बार होती है।

   रुपक का लक्षण—उपमेय में उपमान का निषेध रहित आरोप होता है, जैसे आशा की चिनगारी।

   पुनरुक्ति प्रकाश का लक्षण—एक ही शब्द की पुनः पुनः आवृत्ति होती है जैसे; सोने।

   उपमा का लक्षण—उपमेय की उपमान से सुन्दर और स्पष्ट समता दिखाई जाती है जैसे; विजयमाला सी।

   काव्य—पंक्तियों में जब उदाहरण रुप कुछ कहा जाता है जैसे; सोने की भस्म यथा सोने से।
2. वीर रस इन पंक्तियों में है।
3.

समास पद	**समास विग्रह**	**समास का नाम**
विजय-माला	विजय की माला	षष्ठी तत्पुरुष
स्मृति-शाला	स्मृति के लिए शाला	चतुर्थी तत्पुरुष
वीर-बाला	वीरता से युक्त बाला	कर्मधारय
अमिट	न मिटने वाला	नञ् तत्पुरुष

4.

शब्द	**उपसर्ग**	**प्रत्यय**	**मूल शब्द**
मूल्यवती	—	वती	मूल्य
निहित	नि	—	हित
अमर	अ	—	मर
अन्तिम	—	इम	अन्त

❖❖

11 युवा जंगल, भाषा एकमात्र अनन्त है

—अशोक वाजपेयी

(जीवन काल—सन् 1941 ई.)

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पृ०सं० 117 पर देखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पृ०सं० 117 पर देखिए।
2. कवि कहता है वृक्षों के निरन्तर कटाव को देखकर उसका हृदय बहुत दुखी होता है, क्योंकि वह चारों तरफ हरियाली ही निहारना चाहता था। एक दिन युवा अर्थात् नवीन जंगल की ओर उसकी दृष्टि जाती है तो वह उसे देखकर बहुत प्रसन्न होता है।
3. कवि कहते हैं कि धरती पर जो कुछ दिखाई देता है, वह सब नाशवान है, बस एक चीज नाशवान नहीं है वह है शब्द। शब्द अमर है। अत: शब्दों के रुप में भाषा ही एक ऐसी वस्तु है जो संसार में अमर है, असीम है, अनन्त है।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. अशोक बाजपेयी का जन्म सन् 1941 में हुआ।
2. अशोक बाजपेयी का जन्म मध्यप्रदेश के दुर्ग नामक स्थान पर हुआ।
3. आविन्यों, उम्मीद का दूसरा नाम, कही नहीं वहीं, कुछ रफू कुछ थिगड़े, दुख चिट्ठी रसा है।

काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण बोध

1. (क) मानवीकरण
   (ख) मानवीकरण
2. आकाश— अन्तरिक्ष, अम्बर, नभ, व्योम
   आँख— चक्षु, लोचन, नयन, अक्षि
   पेड़— पादप, वृक्ष, विटप, दरख्त
   फूल— पुष्प, सुमन, कुसुम, प्रसून
   जंगल— वन, आरण्य, कानन, विपिन
3. (i) मेरा सौभाग्य है कि तुम मेरे भाग्य के साथी बनो।
   (ii) मैं तुम्हारी फ्रिक करती हूँ और तुम बेफ्रिक होकर घूमते रहते हो।
   (iii) जब मुझे दु:ख की अनुभूति हुई तो मेरी गरीबों के प्रति सहानुभूति होने लगी।
   (iv) दुकानदार के साथ ग्राहक का समझौता न होने पर संग्राहक आ जाते हैं।
   (v) माता-पिता बच्चे के सच्चे पथ-प्रदर्शक होते हैं, दुनिया इस बात पर दर्शक बनकर देखती है।
4.. सौभाग्य सौ + भाग्य
   बेफ्रिक बे + फ्रिक
   सहानुभूति सह + अनुभूति
   संग्राहक सम् + ग्राहक

❖❖

12

हल्दीघाटी

—श्याम नारायण पाण्डेय

(जीवन काल—सन् 1907–1991 ई.)

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पृ०सं० 120 पर देखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पृ०सं० 120 पर देखिए।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. श्याम नारायण पाण्डेय का जन्म सन् 1907 ई० में ग्राम डूमराव, मऊ आजमगढ़ (उत्तर प्रदेश) में हुआ था।
2. हल्दीघाटी, जौहर, तुमुल, जय हनुमान, रूपान्तर।
3. श्याम नारायण पाण्डेय की मृत्यु सन् 1991 ई० में हुई।

काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण बोध

1. चढ़कर चेतक पर घूम-घूम
   करता सेना रखवाली था।
   ले महामृत्यु को साथ-साथ
   मानो प्रत्यक्ष कपाली था।
2. (क) अतिशयोक्ति, उपमा अलंकार
   (ख) अतिशयोक्ति, अनुप्रास अलंकार
   जब किसी बात को अधिक बढ़ा-चढ़ाकर किया जाता है, तो वहाँ अतिशयोक्ति होती है। उपमेय में उपमान की समानता दिखाई जाती है, वहाँ उपमा अलंकार होता है, जहाँ एक वर्ण की आवृत्ति दो या दो से अधिक होती है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।
3. वीर रस की परिभाषा—शत्रु की उन्नति, दीनों पर अत्याचार या धर्म की दुर्गति को मिटाने जैसे किसी विकार या दुष्कर कार्य को करने का उत्साह मन में उमड़ता है, वही वीर रस का स्थायी भाव है, जिसकी पुष्टि होने पर वीर रस की सिद्धि होती है।
   उदाहरण—वह हाथी दल पर टूट पड़ा
   मानो उस पर पवि छूट पड़ा
   फट गई वेग से भू ऐसा।
   शोभित का नाला फूट पड़ा।
4. तमाशा देखना—हल्दी घाटी के युद्ध में मुगल सेना राणाप्रताप के रण कौशल का तमाशा देखती रह गयी।
5. रक्त का प्यासा होना—राणा प्रताप शत्रु सेना पर इस भाँति टूट पड़ता था मानो तलवार रक्त की प्यासी हो।
6. हलचल मचाना—हल्दीघाटी के युद्ध में राणा प्रताप अपने घोड़े चेतक पर सवार होकर जिस ओर मुड़ जाता था उसी ओर मुगल सेना में हलचल मच जाती थी।

❖❖

13

नदी

–केदारनाथ सिंह

(जीवन काल–सन् 1934–2018 ई.)

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पृ०सं० 123 पर देखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पृ०सं० 123 पर देखिए।
2. पृ०सं० 123 पर देखिए।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. केदारनाथ अग्रवाल का जन्म 7 जुलाई सन् 1934 को उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के चकिया गाँव में हुआ था।
2. अभी बिल्कुल अभी, जमीन पक रही है, फागुन के गीत और साइकिल, अकाल में सारस।
3. केदारनाथ अग्रवाल की मृत्यु सन् 2018 में हुई।

काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण बोध

1. (क) ल, च, क की आवृत्ति के कारण अनुप्रास अलंकार है।
(ख) 'ए', 'क', 'च' की आवृत्ति के कारण अनुप्रास अलंकार है।

2.

सोमेश्वर–	सोम + ईश्वर	गुण सन्धि
तन्द्रालस–	तन्द्रा + आलस	दीर्घ सन्धि
अनासक्ति–	अन् + आसक्ति	दीर्घ सन्धि
निष्कलंक–	निस् + कलंक	अयादि सन्धि
नागधिराज–	नाग + अधिराज	दीर्घ सन्धि
हर्षातिरेक–	हर्ष + अतिरेक	दीर्घ सन्धि
रवीन्द्र–	रवि + इन्द्र	दीर्घ सन्धि
अत्याधुनिक–	अति + आधुनिक	गुण सन्धि

3.

शब्द	**उपसर्ग**	**मूल शब्द**
अधिनियम	अधि	नियम
अत्याचार	अति	आचार
उदाहरण	उदा	हरण
अभिव्यक्ति	अभि	व्यक्ति
उपाध्यक्ष	उप	अध्यक्ष
उपनिर्वाचन	उप	निर्वाचन
निरभिमान	निर्	अभिमान
दुष्प्रयोग	दुस्	प्रयोग
व्याख्या	वि	आख्या
व्याकरण	वि + अ	करण
समाधान	सम	आधान
सुविख्यात	सु	विख्यात
स्वागत	सु	आगत
समाचार	सम	आचार

4.

सच्चाई	सच्चा	आई
फूलदान	फूल	दान
सुनाई	सुना	आई

❖❖

1 वाराणसी

तथ्यपरक प्रश्न

1. छात्र स्वयं करें।

(क) वाराणसी नगरी गंङ्गाया कूले स्थिता।

(ख) वेदेशिकाः पर्यटकाः घट्टानाञ्च शोभान् अवलोक्य वाराणसीं प्रशंसन्ति।

(ग) वेदेशिकाः गीर्वाणवाण्याः वाराणसीम् आगच्छन्ति।

(घ) वाराणस्यां त्रय विश्व विद्यालयाः सन्ति। हिन्दू विश्वविद्यालयः, संस्कृत विश्वविद्यालयः, काशीविद्यापीठम्।

(ङ) वाराणसी संस्कृतभाषाया केन्द्र अस्ति।

(च) दाराशिकोहः मुगल युवराज वाराणस्याम् आगत्य भारतीय दर्शन शास्त्राणाम् अध्ययनम् अकरोत्।

(छ) दारा शिकोहः वाराणसीः गत्वा भारतीय शास्त्रणाम् अध्ययनम अकरोत्।

(ज) दारा शिकोहः पारसी भाषायाम् उपनिषदाय अनुवादम् अकारयत्।

(झ) वाराणसी नगरी विविधधर्माणां सङ्गमस्थली अस्ति।

(ञ) वाराणसी भारतीय संस्कृति संस्कृत भाषायाश्च प्रसिद्धा।

(ट) वाराणसी मरणं मङ्गल भवति।

(ठ) सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालयः काशी नगर्यां विद्यते।

(ढ) दाराशिकोहः भारती-दर्शन शास्त्राणाम् अध्ययन अकरोत्।

(ण) वाराणस्याः कोशेयशाटिकाः वस्तूनि प्रसिद्वानि सन्ति।

(त) वाराणसी नगरी गंगायाः कूले स्थिता।

(थ) वाराणसी नगरी विविधानां कलानां, शिल्पानाञ्च कृते लोक विश्रुता अस्ति।

(द) घट्टाना शोभा विलोक्य पर्यटकाः बहु प्रशंसन्ति।

(ध) वाराणस्यां प्राचीनकालादेव गेह-गेह विद्यायाः दिव्यं ज्योतिः द्योतते।

अनुवादात्मक प्रश्न

छात्र स्वयं करें।

व्याकरणात्मक प्रश्न

1. (क) पर्यटक अपने दशों से अलग होकर आते हैं। अलग होने के अर्थ में पंचमी विभक्ति होती है।

(ख) 'हेतु' के अर्थ में चतुर्थी विभक्ति होती है।

(ग) कर्मकारक में द्वितीया विभक्ति होती है।

(घ) आधार में सप्तमी विभक्ति होती है।

2.

क्रिया रूप	धातु	लकार	वचन	पुरुष
आयान्ति	आ + या	लट्	बहुवचन	प्रथम
वर्द्धयति	वृध्	लट्	एकवचन	प्रथम
गृहणन्ति	ग्रह	लट्	बहुवचन	प्रथम
अकरोत्	कृ	लङ्	एकवचन	प्रथम
स्पृहन्ति	स्पृह्	लट्	बहुवचन	प्रथम
परिपातयन्ति	परि + पात्	लट्	बहुवचन	प्रथम
आगच्छन्ति	आ + गम्	लट्	बहुवचन	प्रथम
प्रवहति	प्र + वह	लट्	एकवचन	प्रथम

3.

शब्द-रूप	शब्द	विभक्ति	वचन
इयम्	इदम्	प्रथमा	एकवचन
गङ्गायाः	गंङ्गा	पंचमी	एकवचन
देशेभ्यः	देश	चतुर्थी/पचंमी	बहुवचन
अध्ययनम्	अध्ययन	प्रथमा/द्वितीया	एकवचन
स्वीयान्	स्वीय	द्वितीया	बहुवचन
विचारान्	विचार	द्वितीया	बहुवचन

4.

वलयाकृतिः	दीर्घसन्धि
इत्येन	यण् सन्धि
अत्रागत्य	दीर्घ सन्धि
विभूतिश्च	श्चुत्व सन्धि

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. वाराणसी (काशी) की भूमि सदियों से हिन्दुओं के लिए परम तीर्थ स्थल रही है। हिन्दुओं का मानना है कि जिसे वाराणसी की भूमि पर मरने का सौभाग्य प्राप्त होता है, उसे जन्म और पुर्नजन्म के चक्र से मुक्ति मिल जाती है।

2. वाराणसी पाठ का सारांश—वाराणसी सुविख्यात प्राचीन नगरी है यह गंगा नदी के तट पर बसी हुई है। इसके घाटों की शोभा देखने लोग दूर-दूर से आते हैं। यहाँ के तीन विश्वविद्यालय प्रसिद्ध हैं। हिन्दू विश्वविद्यालय संस्कृत विश्वविद्यालय तथा काशी विश्वविद्यालय यहाँ विदशों से लोग पढ़ने आते हैं, मुगल युवराज भी यहाँ विद्याध्ययन के लिए आया था।

यह विभिन्न धर्मों की संगम स्थली है। यहाँ महात्मा बुद्ध, तीर्थकर पार्श्वनाथ, शंकराचार्य, कबीर, गोस्वामी तुलसीदास तथा अन्य बहुत से महात्माओं ने यहाँ आकर अपने विचारों का प्रसार किया। यहाँ की रेशमी साड़ियाँ बहुत प्रसिद्ध हैं।

यहाँ पर प्रथा प्रसिद्ध है कि यहाँ मरने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

❖❖

2 देशभक्तः चन्द्रशेखरः

तथ्यपरक प्रश्न

1. छात्र स्वयं करें।
2. प्रश्नों के उत्तर दीजिए—
   (क) न्यायाधीशस्य पीठे (आसने) एक पारसीकः अतिष्ठत्।
   (ख) चन्द्रशेखरः प्रसिद्धः क्रान्तिकारी देशभक्तश्चासीत्।
   (ग) चन्द्रशेखरः आङ्ग्लशासकैः राजद्रोही घोषितः अतः बन्दीकृतः।
   (घ) चन्द्रशेखरः एकस्य आरक्षकस्य मस्तके पाषाण-खण्डेन प्राहरत्।
   (ङ)चन्द्रशेखर स्वनाम 'आजाद' इति अकथयत्।
   (च) चन्द्रशेखरः स्वगृहं कारागारम् अवदत्।
   (छ) न्यायाधीशः चन्द्रशेखर पञ्चदश कशाघातान् अदण्डयत्।
   (ज) कशया ताडितः चन्द्रशेखरः पुनः पुनः 'जयतु भारतम् इति' अकथयत्।
   (झ) यदा चन्द्रशेखरः कारागारात् बहिः आगच्छति तदा बालकाः तस्य पादयोः पतन्ति, तं माताभिः। अभिनन्दयन्ति च।
   (ञ) इदं चन्द्रशेखरस्य कथनम् अस्ति।
   (ट) इदं चन्द्रशेखरस्य कथनं न्यायाधीशं प्रति अस्ति।
   (ठ) चन्द्रशेखरः स्व पितुः नाम 'स्वतन्त्र' इति अकथयत्।
   (ड) 'कारागार एवं मम गृहम्' इति चन्द्रशेखरः अवदत्।
   (ढ) 'स्वतन्त्रः चन्द्रशेखरस्य पितुः नाम आसीत्।
   (ण) चन्द्रशेखरस्य रक्त विन्दवः अग्नि स्फुतिङ्गा शत्रूणां कृते भविष्यन्ति।
   (त) दुर्भुजः चाण्डालः आसीत्।
   (थ)'जयतु भारतम्' इति कथनम् चन्द्रशेखरस्य गणडासिंह प्रति च अस्ति।
   (द) आरक्षकस्य नाम दुर्जयसिंहः आसीत्।
   (ध) न्यायाधीशः एकः दुर्धर्षः पारसीकः आसीत्।
   (न) प्रतिकशाघात् पश्चात् चन्द्रशेखरः 'जयतु भारतम्' इति अकथयत्।
   (प) आरक्षकस्य दुर्जन सिंहस्य मस्तके प्रस्तरखण्डेन प्रहारेण कारणेन चन्द्रशेखरः न्यायालये आजीतः।
   (फ) राष्ट्रभक्तः चन्द्रशेखरः अस्ति।

अनुवादात्मक प्रश्न

छात्र स्वयं करें

व्याकरणात्मक प्रश्न

1.

युष्मद्—	पंचमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
अस्मद्—	सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

2.

	लकार	**वचन**	**पुरुष**
आनायन्ति	लट्	बहुवचन	प्रथम
अस्ति	लट्	एकवचन	प्रथम
निवससि	लट्	एकवचन	मध्यम
दण्डयामि	लट्	एकवचन	उत्तम
ताडयति	लट्	एकवचन	प्रथम
वदति	लट्	एकवचन	प्रथम
वेष्टयन्ति	लट्	बहुवचन	प्रथम
आगच्छति	लट्	एकवचन	प्रथम
अभिनन्दयन्ति	लट्	बहुवचन	प्रथम
भविष्यन्ति	लृट्	बहुवचन	प्रथम
तिष्ठति	लट्	एकवचन	प्रथम
लभस्व	लोट्	एकवचन	मध्यम

3. तदा + एव, न + अस्ति, स्व + अविनयस्य

4.

भालाभि	तृतीया विभक्ति	बहुवचन
सर्वे	प्रथम तथा द्वितीया विभक्ति	द्विवचन
तस्याः	षष्ठी विभक्ति	एकवचन

5.

कशाघातः	कशायाः आघातः	षष्ठी तत्पुरुष
रक्तबिन्दवः	रक्तस्य विन्दवः	षष्ठी तत्पुरुष

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. छात्र स्वयं करें।
2. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महानायक एवं लोकप्रिय स्वतंत्रता सेनानी चन्द्रशेखर आजाद का जन्म 23 जुलाई, सन् 1906 ई० को मध्य प्रदेश के झाबुआ जिले के भाबरा नामक स्थान पर हुआ। उनके पिता का नाम पंडित सीताराम तिवारी तथा माता का नाम जगदानी देवी था। उनके पिता ईमानदार, स्वाभिमानी, साहसी और वचन के पक्के थे। यही गुण चन्द्रशेखर को अपने पिता से विरासत में मिले थे।
   चन्द्रशेखर आजाद 14 वर्ष की आयु में बनारस गए और वहाँ एक संस्कृत पाठशाला में पढ़ाई की। वहाँ उन्होंने कानून भंग आन्दोलन में योगदान दिया था। 1920-21 के वर्षों में वे गाँधीजी के असहयोग आन्दोलन से जुड़े। वे गिरफ्तार हुए और जज के समक्ष प्रस्तुत किए गए। जहाँ उन्होंने अपना नाम 'आजाद' पिता का नाम 'स्वतंत्र' और 'जेल' को अपना निवास बताया। उन्हें 15 कोड़ों की सजा दी गई। हर कोड़े के वार के साथ उन्होंने 'वन्देमातरम्' और 'महात्मा गांधी की जय' का स्वर बुलन्द किया। इसके बाद वे सार्वजनिक रूप से आजाद कहलाए। क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आजाद का जन्म स्थान भाबरा अब 'आजाद नगर' के रूप से जाना जाता है।
   भगत सिंह, राम प्रसाद विस्मिल, महात्मा गांधी, लाला लाजपत राय, बालगंगाधर तिलक, सुखदेव, सुभाष चन्द्र बोस, सरदार बल्लभभाई पटेल।

❖❖

3 भारतीया संस्कृतिः

तथ्यपरक प्रश्न

1. छात्र स्वयं करें।
2. प्रश्न के उत्तर—

(क) मानव जीवनस्य संस्करणम् संस्कृतिः इति संस्कृति शब्दस्व तात्पर्यम्।

(ख) विश्वस्य स्रृण्टा ईश्वरः एक इव इति भारतीय संस्कृतेः मूलम् अस्ति।

(ग) सर्वेषां मतानां सम्भावः सम्मानश्च अस्माकं संस्कृतेः दिव्यः सन्देशः अस्ति।

(घ) भारतीयाः संस्कृतिः सर्वेषां मतावलम्बिन सङ्गमस्थली।

(ङ) अस्माकं भारतीया संस्कृतिः सदा गतिशीला वर्तते (अस्ति)।

(च) भारतीय संस्कृतौ सर्वेषां मतानां समभावः इति विशेषः गुणः अस्ति।

(छ) अस्माकं संस्कृतेः नियमः 'पूर्व कर्म, तदनन्तरं फलम्' इति अस्ति।

(ज) निरन्तरं कर्मकरणम् अस्माकं मुख्य कर्तव्यम् अस्ति।

(झ) 'मा कश्चित् दुःखभागभवेत्' एष भारतीय संस्कृति, दिव्यः सन्देशः अस्ति।

(ञ) भारतीय संस्कृतिः विश्वस्ये अभ्युदयाय इति।

(ट) विश्वस्य स्रष्टा ईश्वरः एक एव अस्ति।

अनुवादात्मक प्रश्न

छात्र स्वयं करें।

व्याकरणात्मक प्रश्न

1.

संस्कृतेः	षष्ठी विभक्ति	एकवचन
विविधैः	तृतीया विभक्ति	बहुवचन
संस्कृतौः	सप्तमी विभक्ति	एकवचन
अस्माभिः	तृतीया विभक्ति	बहुवचन
कर्माणि	द्वितीया विभक्ति	बहुवचन
नवनिर्माणे	सप्तमी विभक्ति	एकवचन
उपासकाः	प्रथमा विभक्ति	बहुवचन

2. इत्यादि, यथार्थम्, जिजीविषेच्छतम्, मतावलम्बी, अभ्युदयः।
3. दुराग्रहः—दुः + आग्रहः सुसजुषो रुः कुर्वन्नेवेह कुर्वन् + एव + इह — ङमोह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम् आदगुणः

नास्ति –न + अस्ति – अकः सवर्णेः दीर्घः

मतावलम्बिनः – मत + अवलम्बिन : अकः सवर्णे दीर्घ

इत्यपि – इति + अपि इकोयणचि

अभ्युदयः – अभि + उदयः इकोयणचि

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. भारतीय संस्कृति परम्परा और लोकाचार है। यहाँ विभिन्नता और विविधता भारत को एक सुन्दर पारम्परिक और सांस्कृतिक देश बनाती है। भारत देश में कोई भी परम्परा का उल्लंघन नहीं करते हैं, यहाँ सभी अपनी जीवन शैली और सांस्कृतिक धरोहर के साथ मिलजुल कर रहते हैं।
2. भारतीय संस्कृति की महत्वपूर्ण विशेषताएँ—संचार, मान्यताएँ, मूल्य, शिष्टाचार और अनुष्ठान है। भारतीय संस्कृति को 'अनेकता में एकता' के लिए जाना जाता है। इसका मतलब है कि भारत एक विविधतापूर्ण देश है। जहाँ कई धार्मिक लोग अपनी अलग-अलग संस्कृतियों के साथ शान्तिपूर्वक रहते हैं।

❖❖

4 वीरः वीरेण पूज्यते

तथ्यपरक प्रश्न

1. छात्र स्वयं करें।
2. प्रश्नों के उत्तर–

(क) अलक्षेन्दः यवनराजः आसीत्।
(ख) पुरुराजः एक भारत वीरः आसीत्।
(ग) पुरुराजः आत्मानं वीरं दर्शयति।
(घ) पुरुराजः अलक्षेन्द्रेण सहयुद्धम् अकरोत्।
(ङ) अलक्षेन्द्रः पुरुराजस्य वीरभावेन हर्षिताः अभवत्।
(च) अलक्षेन्द्रः भारतीय नृपैः सह मैत्री कृत्वा भारतं विभज्य जेतुम् इच्छति।
(छ) यथा वीरः वीरेण सह व्यवहरति आत्मना सह तथैव व्यवहर्तुं पुरुराजः कथयति।
(ज) पुरुराजः गीताया सन्देशम् अकथयत् युद्धे जयस्य पराजयस्य वा चिन्तां त्यक्त्वा युद्धं करणीयम्। युद्ध मरणेन स्वर्ग प्राप्तिः जयेन च राज्य प्राप्तिः भवति इति।
(झ) वीरः वीरेण पूज्यते।
(ञ) युद्ध जित्वा भोक्ष्यसे महीम्।
(ट) अलक्षेन्द्रः राज्ञा पुरुणा सह मित्रवत व्यवहार अकरोत्।
(ठ) कस्तावद गीतायाः सन्देशः ? इति अलक्षेन्द्रः पुरु अपृच्छत्।
(ड) भारत विनयः न केवल दुष्करः असम्भवोऽपि, इति पुरुराजस्य उक्तिः।
(ढ) भारतम् एकं राष्ट्रमं! इति अलक्षेन्द्रस्य उक्तिः।
(ण) अलक्षेन्द्रः सेनापतिम् आदिशत्यत् "वीरस्य पुरुराजस्य बन्धनामि मोचयः"।

अनुवादात्मक प्रश्न

छात्र स्वयं करे

व्याकरणात्मक प्रश्न

1. लब्धता, जीत्वा, गत्वा, हत्वा, गृहीत्वा
2.

शब्द	विभक्ति	वचन
पञ्जरे	सप्तमी	एकवचन
बन्धनम्	द्वितीया	एकवचन
अस्वीकरणे	सप्तमी	एकवचन
जनाः	प्रथमा	बहुवचन
सर्वे	प्रथमा	बहुवचन
गीतायाः	षष्ठी	एकवचन
आत्मानम्	द्वितीया	एकवचन
वने	सप्तमी	एकवचन
तव	षष्ठी	एकवचन
राजानः	प्रथमा	एकवचन
समुद्रस्य	षष्ठी	एकवचन
मे	चतुर्थी/षष्ठी	एकवचन

3.

धातुरूप	धातु	लकार	पुरुष	वचन
भवतु	भू	लोट	प्रथम	एकवचन
इच्छसि	इष्	लट्	मध्यम	एकवचन
लभते	लभ्	लट्	प्रथम	एकवचन
दुह्यन्ति	दुह्	लट्	प्रथम	बहुवचन

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. प्रस्तुत पाठ में सिकन्दर और पुरुराज के संवादों के द्वारा वीरता को परिभाषित किया गया है। सिकन्दर की सेना का शिविर है। उसमें सिकन्दर और आम्भीक बैठे हुए हैं। पुरुराज को बन्दी बनाकर यवनों का सेनापति आता है, वह और पुरुराज युवराज का अभिवादन करते हैं। सिकन्दर व्यंग्यपूर्वक पुरुराज से कहता है कि तुम अपने आपको अभी भी वीर मानते हो, तब पुरुराज कहता है कि शेर तो शेर होता है चाहे वह वन में रहे या जंगल में तब सिकन्दर कहता है कि पिंजरे का सिंह पराक्रमी नहीं होता है तब पुरुराज कहता है कि अवसर मिले तो वह हो सकता है। दोनों के बीच वार्तालाप होता है, वह पुरुराज से मित्रता की बात कहता है तब पुरुराज कहता है कि मित्रता के बहाने बहुत से राज्य खण्डित हो गये। सिकन्दर कहता है कि भारत एक राष्ट्र है तुम गलत कहते हो यहाँ के राजा और प्रजा आपस में द्वेष करते हैं। पुरुराज कहता है कि हमारा आपसी मामला है, इसमें बाहरी शक्ति का हस्तक्षेप असहनीय है। हमारा धर्म, भाषा, वेशभूषा अलग होते हुए भी हम भारतीय हैं, हमारा राष्ट्र विशाल है ऐसा कहा गया है कि "समुद्र से उत्तर में और हिमालय के दक्षिण में जो देश स्थित है, वह भारतवर्ष है, जिसकी सन्तान भारतवासी हैं।"
2. प्रस्तुत पाठ के अनुसार आम्भीक एक यवन है, वह भारत वर्ष पर अपना अधिपत्य स्थापित करना चाहता है, वह एक वीर योद्धा भी है जबकि पुरुराज एक वीर योद्धा के साथ-साथ देशभक्त वीर है, वह किसी भी कीमत पर अपने देश पर दूसरे का अधिपत्य स्थापित नहीं होने चाहता है, वह अपने देश को अखण्ड राष्ट्र मानता है तथा उसके लिए अपने प्राणों की आहुति भी दे सकता है।
3. वीर पुरुष स्वयं अपनी वीरता का बखान नहीं करते हैं अपितु वीरता पूर्ण कार्य स्वयं वीरों का बखान करते हैं।
वीर पुरुष स्वयं पर कभी अभिमान नहीं करते। वीर पुरुष दीन-हीन, दुर्बल व्यक्तियों पर अपनी वीरता का प्रदर्शन नहीं करते हैं।

❖❖

5 छान्दोग्य उपनिषदः षष्ठोध्यायः

तथ्यपरक प्रश्न

1. छात्र स्वयं करें।
2. प्रश्न-उत्तर—
   (क) श्वेतकेतुः आरुणेय पुत्रः आसीत्।
   (ख) श्वेतकेतुः द्वादशवर्षम् उपेत्य चतुर्विंशति वर्षः वेदानधीत्य आगतः।
   (ग) श्वेतकेतुः द्वादशवर्षाणि सर्वान् वेदान् अपठत्।
   (घ) अनूचानमानी श्वेतकेतुः अभवत्।
   (ङ) मृत्पिण्डेन सर्व मृण्मयं विज्ञातम्।
   (च) लोहमणिनी लोहमयं विज्ञातम्।
   (छ) श्वेतकेतुः आरुणिं गुरुरूपेण स्वीकारोति।

अनुवादात्मक प्रश्न

छात्र स्वयं करें

व्याकरणात्मक प्रश्न

1. श्वेतकेतुः + आरुणेय, पिता + उवाच, श्वेतकतुः + वस, सोम्य + अस्मत्, कुलीनः + अननूचय, भवति + इति, सोम्य + इदम्, स्तब्धः + अस्युत, तम् + आदेशम्, येन + अश्रुतम्, मृत् + मयम्, विकार + नामधेयम्, लोहम् + इति + एव, सत्यम् + एवम्, भगवन्त + त।
2.

शब्द	**उपसर्ग/प्रत्यय**
अननूच्य	अन् + अनुच्य
ब्रह्मबन्धु	ब्रहम + बन्धुः
उपेत्य	उप + इत्य
अधीत्य	अधि + इत् + ल्यप्
महामना	महान् + मन् + आप्
स्तब्ध	स्त् + अब्ध
प्राक्ष्यः	प्र + अक्ष्यः
विज्ञातम्	वि + ज्ञातम्
लोहमित्य	लोहम् + इति + ल्यप्

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. प्रस्तुत पाठ से हमें यह शिक्षा मिलती है ब्राह्मण होने से ब्राह्मण नहीं होता, उसे उनके लिए ब्राह्मणोचित कार्यों को करना चाहिए। ज्ञान प्राप्त करने से व्यक्ति ज्ञानी बनता है।
2. प्रस्तुत पाठ में आरुणि अपने पुत्र को ज्ञान की बातें बता रहे हैं, वह अपने पुत्र श्वेतकेतु से कहते हैं कि ब्राह्मणोचित आचरण के लिए उसे गुरुकुल में जाना चाहिए वहाँ वह नियमों का पालन करके उच्चकोटि का बनता है।
   बारह वर्ष श्वेतकेतु आश्रम में पढ़कर 24 वर्ष की आयु में सभी वेदों को पढ़कर स्वाभिमानी, पाण्डित्यमना, अहंकार युक्त होकर लौटा तो पिता ने कहा—हे श्वेतकेतु! तुम जो इस तरह अभिमान से युक्त हो, तुमने कौन-सी विशेषता पायी है? क्या तुम जानते हो कि कौन-सा ऐसा पदार्थ है जिसके समझ लेने पर अश्रुत पदार्थ का ज्ञान हो जाता है, जो अतार्किक है उसे तार्किक भी याद हो जाये और अविज्ञात भी ज्ञात होता है, अनिश्चित भी निश्चित हो जाता है। क्या तुमने गुरु से पूछा है? पिता आरुणि ने कहा—हे श्वेतकेतु जिस प्रकार (मिट्टी के बने) पात्रों को देखकर उनके मिट्टी द्वारा बने होने का आभास नहीं किया जा सकता है, किन्तु वास्तव में वे मिट्टी के बने होते हैं। अर्थात् पात्रों में मृत्तिकत्व है यही सत्य है। पिता आरुणि ने कहा—"हे श्वेतकेतु! जिस प्रकार चुम्बक को देखकर उसके लोहे द्वारा बने होने का आभास नहीं किया जा सकता है किन्तु वास्तव में वह लोहे का बना होता है अर्थात् चुम्बक में लौहत्व है यही सत्य है। आरुणि ने फिर श्वेतकेतु को नैतिकता के माध्यम से समझाया तो श्वेतकेतु भी समझ गया है कि व्यक्ति का व्यक्तित्व किस तरह बनता है, वह अपने पिता से कहता है कि आप ही मेरे गुरु हो जिन्होंने मुझे आत्म-बोध कराया।
3. अगर भारत के इतिहास में गुरु-शिष्य के सम्बन्ध को देखें तो वैदिककाल में गुरु-शिष्य के बीच अत्यंत ही मधुर संबंध होते थे। इसके कई उदाहरण हैं जैसे गुरु द्रोणाचार्य और एकलव्य के बीच, गुरु द्रोणाचार्य और अर्जुन के बीच, गुरु विश्वामित्र के शिष्य मर्यादा पुरुषोत्तम राम और उनके अनुज के बीच।

❖❖

6 जीवन-सूत्राणि

तथ्यपरक प्रश्न

1. छात्र स्वयं करें।
2. प्रश्न-उत्तर—
   (क) माता गुरुतरा भूमेः।
   (ख) खात् (आकाशात्) उच्चतरं पिता अस्ति।
   (ग) वातात् शीघ्रतरं मनः अस्ति।
   (घ) तृणात् चिन्ता बहुतरी अस्ति।
   (ङ) प्रवासतो (विदेशे) मित्रम् धनम् अस्ति।
   (च) भार्या गृहे सर्तः मित्रम् अस्ति।
   (छ) मरिण्यतः मित्रं दानम् अस्ति।
   (ज) धनानाम् उत्तमं श्रुतम् (विद्या) अस्ति।
   (झ) लाभानाम् उत्तमम् आरोग्यम् अस्ति।
   (ञ) तुष्टिः सुखानाम् उत्तमा स्यात्।
   (ट) मानं हित्वा नरः प्रियां भवति।
   (ठ) नरः क्रोधं हित्वा न शोचते।
   (ड) मनुष्यः लोभ हित्वा सुखी भवति।
   (ढ) श्रुत सर्वेषु उत्तमं धनम् अस्ति।
   (ण) आतुरस्य मित्रं वैद्यः अस्ति।
   (त) क्रोधं त्यक्त्वा न शोचति।
   (थ) आतुरस्य मित्र भिषक् अस्ति।
   (द) लोभ हित्वा सुखी भवेत्।
   (ध) मनः शीघ्रतरं वातात् चिन्ता बहुतरी तृणात्।

अनुवादात्मक प्रश्न

छात्र स्वयं करें

व्याकरणात्मक प्रश्न

1.

शब्द	**विभक्ति**	**वचन**
तृणात्	पंचमी	एकवचन
मित्रम्	प्रथमा	एकवचन
धनानाम्	षष्ठी	बहुवचन
प्रियः	प्रथमा	एकवचन
कामम्	द्वितीया	एकवचन
वातात्	पंचमी	एकवचन
भूमेः	पंचमी	एकवचन
गृहे	प्रथमा/द्वितीया/सप्तमी	द्विवचन/एकवचन
आतुरस्य	षष्ठी	एकवचन

2. 'मृ' धातु लट् लकार (वर्तमानकाल)

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम	म्रियते	म्रियेते	म्रियन्ते
मध्यम	म्रियसे	म्रियेथे	म्रियध्वे
उत्तम	म्रिये	म्रियावहे	म्रियामहे

'भू' धातु (विधितिङ् लकार)

प्रथम	भवेत्	भवेताम्	भवेयुः
मध्यम	भवेः	भवेतम्	भवेत
उत्तम	भवेयम्	भवेव	भवेम

3.

धातु रूप	**धातु**	**लकार**	**पुरुष**	**वचन**
भवेत्	भू	विधिलिंग	प्रथम	एकवचन
मरिष्यतः	मृ	लृट्	प्रथम	द्विवचन
स्यात्	अस्	विधिलिंग	प्रथम	एकवचन
शोचति	शोच्	लट्	प्रथम	एकवचन

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. जिस व्यक्ति को चिन्ता लग जाती है, वह चिन्ता में तिनके से अधिक दुर्बल हो जाता है।
2. यक्ष और युधिष्ठिर संवाद या लेख।
3. जब युधिष्ठिर पानी के लिए तालाब के पास आते है, तो वहाँ अपने भाइयों को मूर्छित पाते हैं, तब उस जलाशय से एक यक्ष निकलता है वह युधिष्ठिर से कहता है कि तुम अपने भाइयों को जीवित करना चाहते हो तो मेरे प्रश्नों का उत्तर दो तब यक्ष, युधिष्ठिर से प्रश्न पूछता रहता है, और युधिष्ठिर उसका सही उत्तर देते रहते हैं, इस तरह वह अपने भाइयों की जान बचाते हैं।

❖❖

7 प्रबुद्धो ग्रामीणः

तथ्यपरक प्रश्न

1. छात्र स्वयं करें।
2. प्रश्न-उत्तर—

(क) ग्रामीणान् उपसहन् नागरिकः अकथयत्—"ग्रामीणः अद्यापि पूर्ववत् अशिक्षिताः अज्ञानश्च सन्ति। न तेषां विकास अभवत् न च भवितुं शक्नोति।"

(ख) समये स्वीकृते प्रथमे ग्रामीणः अवदत्।

(ग) ग्रामीणः प्रथमं प्रहेलिकाम् अपृच्छत्।

(घ) ग्रामीणः नागरिकं प्रहेलिकाय अपृच्छत् यत् अपदां दूरगामी च साक्षरो न च पण्डितः। अमुखः स्फुट वक्ता च यो जानाति स पण्डितः॥

(ङ) नागरिकः प्रहेलिकायाः उत्तरं दानुं समर्थः न अभवत्।

(च) ग्रामीणस्य प्रहेलिकाया उत्तरं 'पत्रं' इति आसीत्।

(छ) नागरिकः ग्रामीणस्य प्रहेलिकायाः उत्तरं दातुं समर्थः न अभवत्, अतः लज्जितः अभवत्।

(ज) पदेन बिना पत्रं दूरं याति।

(झ) नागरिकः दण्डदानेन खिन्नः अभवत् अतः कामापि प्रहेलिकां न अस्मरत्। अतः सः न अपृच्छत्।

(ञ) अन्ते नागरिक अनुभवम् अकरोत् यत् ज्ञानं सर्वत्र सम्भवति, ग्रामीण अपि कदाचित नागरिकेभ्यः प्रबुद्धतराः भवति।

(ट) ज्ञान सर्वत्र सम्भवति।

(ठ) नागरिकः ग्रामीणस्य प्रहेलिकायाः उत्तरं दातुं समर्थः न अभवत्।

(ड) अमुखमपि पत्रं स्फुटवक्ता भवति।

(ढ) ग्रामीणान् एकः नागरिकः उपाहसत्।

(ण) धूमयाने समयः एकः ग्रामीणेन जितः।

(त) 'कथयिष्यामि' परं पूर्व समयः विधातव्यम् इति नागरिकेन उक्तम्।

(थ) धूमयानम् आरूढ बहवः जनाः नगरं प्रति गच्छन्ति स्म।

(द) 'ज्ञान सर्वत्र सम्भवति' इति नागरिक अन्वभवत्।

(ध) ग्रामीणः नागरिकं एकं प्रहेलिकाम् अपृच्छत्।

अनुवादात्मक प्रश्न

छात्र स्वयं करें

व्याकरणात्मक प्रश्न

1. अल्पज्ञः, विशेषज्ञः, नीतिज्ञः, वेदज्ञः, नेत्रज्ञः।
2.

धातु + प्रत्यय	नया शब्द
दृश + तव्य	द्रष्टव्य
प्राप् + तव्य	प्राप्तव्य
स्था + तव्य	स्थातव्य
पठ् + तव्य	पठितव्य
ध्या् + तव्य	ध्यातव्य
पा + तव्य	पातव्य

3. **शब्द वाक्य-प्रयोग**

बहुज्ञः—	नागरिकः बहुज्ञः भवति।
अल्पज्ञः—	ग्रामीणः अल्पज्ञः भवति।
चतुरः—	सीताः चतुरः अस्ति।
निर्धनम्—	रामः निर्धनम् पश्यति।
युक्तम्—	युक्तम् अहमेव गच्छामि।
अयुक्तम्—	तस्य तर्कम् अयुक्तम् अस्ति।
उत्तरम्—	अहम् अस्य प्रश्नस्य उत्तरं न जानामि।
तूष्णीम्—	उत्तरं श्रुत्वा स तूष्णीम् अभवत्।

4. **'कृ' धातु लोट् लकार**

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु
मध्यम पुरुष	कुरु	कुरुतम्	कुरुत
उत्तम पुरुष	करवाणि	करवाव	करवाम

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. छात्र स्वयं करें।
2. प्रबद्धो ग्रामीणः पाठ का सारांश

एक बार बहुत से लोग रेलगाड़ी पर चढ़कर नगर की ओर जा रहे थे। उनमें कुछ ग्रामवासी थे और कुछ नगरवासी। उनके चुपचाप बैठे रहने पर एक नगरवासी ने ग्रामवासियों की हँसी उड़ाते हुए कहा कि ग्रामवासी पहले की तरह आज भी अशिक्षित और मूर्ख हैं। उनका कोई विकास नहीं हुआ है। उनकी बातों को सुनकर कोई एक चतुर ग्रामीण ने कहा हे नगरवासी भाई! आप बहुत शिक्षित और जानकार हो यह बात सुनकर नगरवासी ने ऊँची गर्दन करके कहा हाँ हम तो हैं। तब चतुर ग्रामीण ने कहा भाई! हम अशिक्षित हैं, इसीलिए हम एक शर्त रखते हैं कि हम आपसे एक पहेली पूछेंगे। यदि आप उत्तर देने में समर्थ नहीं होगे तो आप दस रुपये देंगे। यदि हम उत्तर देने में समर्थ नहीं होगे तो पाँच रुपये देंगे। इस पर सबकी सहमति हो गयी। तब ग्रामीण एक पहेली पूछता है पर उसका उत्तर नगरवासी नहीं दे पाता है। वह लज्जित हुआ, उसने कहा कि ग्रामवासी शिक्षित और चतुर होते हैं।

❖❖

8 केन किं वर्धते?

तथ्यपरक प्रश्न

1. छात्र स्वयं करें।
2. प्रश्न-उत्तर—
   (क) सुवचनेन मैत्री वर्धते।
   (ख) गुण विनयेन वर्धते।
   (ग) दानेन कीर्तिः वर्धते।
   (घ) श्रीः उद्यमेन वर्धते।
   (ङ) विश्वासः सदाचारेण वर्धते।
   (च) विद्या अभ्यासेन वर्धते।
   (छ) अभ्यासनेन विद्या वर्धते।
   (ज) उपेक्षया रिपुः वर्धते।
   (झ) तपः क्षमया वर्धते।
   (ञ) जलदः पूर्ववायुना वर्धते।
   (ट) मित्र दर्शनेन आह्लादो वर्धते।
   (ठ) नीच सङ्गेन दुश्शीलता वर्धते।
   (ड) रिपुः उपेक्षया वर्धते।
   (ढ) कुटुम्ब कलहेन दुःख वर्धते।
   (ण) रोगः अपथ्येन वर्धते।
   (त) असन्तोषेण तृष्णा वर्धते।
   (थ) उपेक्षया शत्रुः वर्धते।
   (द) तृष्णा असन्तोषेण वर्धते।
   (ध) न्यायेन राज्यं वर्धते।
   (न) समुद्रः इन्दुदर्शनेन वर्धते।
   (प) औदार्येण प्रभुत्वं वर्धते।
   (फ) सत्येन धर्मः वर्धते।
   (ब) दुर्व्यसनेन कलहः वर्धते।
   (भ) कलहः दुर्व्यसनेन वर्धते।
   (म) इन्द्रदर्शनेन समुद्रः वर्धते।
   (य) विनयेन गुणः वर्धते।
   (र) सुवचनेन मैत्री वर्धते।
   (ल) वैश्वानरः तृणेन वर्धते।
   (व) तृणेः वैश्वानरः वर्धते।
   (श) पुत्रदर्शनेन हर्षः वर्धते।
   (ष) द्रारिद्रयम् अशौचेन वर्धते।
   (स) लोभः लाभेन वर्धते।
   (त्र) लाभेन लोभः वर्धते।

अनुवादात्मक प्रश्न

छात्र स्वयं करें।

व्याकरणात्मक प्रश्न

1.

शब्द	विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
विनय	चतुर्थी	विनयाय	विनयाभ्याम्	विनयेभ्यः
	पंचमी	विनयात्	–	–
	षष्ठी	विनयस्य	विनयोः	विनयानाम्
क्षमा	चतुर्थी	क्षमायै	क्षमाभ्याम्	क्षाम्यः
	पंचमी	क्षमायाः	–	–
	षष्ठी	–	क्षमयोः	क्षमाणाम्
रिपु	चतुर्थी	रिपवे	रिपुभ्याम्	रिपुभ्यः
	पंचमी	रिपोः	–	–
	षष्ठी	–	रिपवोः	रिपुणाम्

2. चन्द्र—इन्दुः, विद्युः, सुधाकरः
   उद्यान—उपवनम्, वाटिका
   वायु—पवनः, समीरः, अनिलः
   अग्नि—अनलः, पावकः, दहनः
   पुत्र—तनयः, सुतः, आत्मजः
3. (i) जिसकी सहायता से या जिसके द्वारा कार्यपूर्ण होता है। उसमें करण कारक तथा तृतीया विभक्ति होती है।
   (ii) 'साथ' का अर्थ रखने वाले 'सह', 'सामय', 'साधम्' शब्दों के योग में जिसके साथ क्रिया होती है, उसमें तृतीया विभक्ति होती है।
   (iii) शरीर के जिस अंग में विकार का ज्ञान होता है, उसमें तृतीया विभक्ति होती है। उपर्युक्त कारणों में से प्रथम कारण से पाठ में तृतीया विभक्ति का प्रयोग हुआ है।
4. व्यसनेन तृतीया विभक्ति एकवचन
   क्षमया तृतीया विभक्ति एकवचन
5. सदाचरेण— सत् + आचरेण
   दुश्शीलता— दुः + शीलता

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. मनुष्य को अपने स्वार्थ का त्याग करके परहित के लिए जीना चाहिए। दया, करुणा, परोपकार का भाव रखना चाहिए।
2. सूक्तियाँ हमारे ज्ञान-तर्क की समस्या-समाधान जैसे कौशल तेज करती हैं। सूक्ति से प्राप्त ज्ञान से हम सच्चरित्रवान, गुणवान बन सकते हैं।

❖❖

9 अन्योक्तिविलासः

तथ्यपरक प्रश्न

1. छात्र स्वयं करें।
2. प्रश्न-उत्तर—

(क) कूप: नितरां नीच: अस्ति, अत: स: दुखम् अनुभवति।

(ख) अत्यन्तसर सहृदयो यत: परेषां गुणग्रहीतासि।

(ग) कवि: हंस नीर-क्षीर-विभागे आलस्यं न कुर्त बोधयति।

(घ) कवि: कोकिलं कथयति (बोधयति) यत् बसन्तकालं यावत् कोऽपि रसाल: न समुल्लयति तावत् करीलविटपेषु एवं सन्तोष कर्त्तव्यम्।

(ङ) कवि: चातकम् उपदिशति (शिक्षयति) यत् स: सर्वेषा पुरत: दीनं वच: न ब्रूयात्।

(च) सुवर्णं गुञ्जयासह तोलयन्ति इति सुवर्णस्य मुख्य दु:खम् अस्ति।

(छ) भ्रमरे चिन्तयति गज: नलिनीम् उज्जहार।

(ज) कोशगत: भ्रमर: अचिन्यत् 'रात्रि: गमिष्यति, सुप्रभातं भविष्यति, सूर्यम् उदेष्यति, कमतं विकसिष्यति।

(झ) हंसस्य कुलव्रतम् नीर-क्षीर-विवेकम् अस्ति।

(ण) गगने सर्वे नैतादृशा: अभ्भोदा: वसन्ति। केचिद वसुधा वृष्टिभि: आर्द्रयन्ति केचिद् वृथा गर्जयन्ति।

(ट) गज: नलिनीम् उज्जहार।

(ठ) नीर-क्षीर विषये नीर-क्षीर विवेकम् एवं हंसस्य विशेषता अस्ति।

अनुवादात्मक प्रश्न

छात्र स्वयं करें।

व्याकरणात्मक प्रश्न

1. जब किसी उक्ति में साधर्म्य के कारण कथित वस्तु के माध्यम से किसी अन्य का कोई उपदेश शिक्षा अथवा सन्देश दिया जाता है तो उसे अन्योक्ति अलंकार कहते हैं; जैसे पाँचवें श्लोक में सोने और गुंजा के माध्यम से गुणवान स्वाभिमानी व्यक्ति की उस मानसिक पीड़ा को व्यक्त किया गया है, जो उसकी नीच व्यक्ति के साथ अपनी तुलना किये जाने पर होती है।
2.

वस्तु	**प्रतीक**	**वस्तु**	**प्रतीक**
कूप	गम्भीर पुरुष	हंस	गुणग्राहीपुरुष
कोकिल	विद्वान पुरुष	करीलविटप	विपत्ति के दिन
चातक	विद्वान् पुरुष	सुवर्ण	विद्वान् स्वाभिमानि पुरुष
गुँजा	नीच व्यक्ति	हिरेक	मनुष्य
गज	मृत्यु		

3. अस्मि + इति, अति + अन्त, न + एतादृशा:, कदा + अपि, अधुना+ अन्य:, तत् + एकम्।
4. बादल — जलद:, नीरद:।
   कमल — पुण्डरीक:, जलज:।
   हाथी — हस्ती, करी।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. मनुष्य को जीवन में कोई कल्पना नहीं करनी चाहिए क्योंकि उसके ऊपर कुछ भी निर्भर नहीं है। होता वही है, जो ईश्वर चाहता है।
2. हमें अपने आपको तुच्छ नहीं समझना चाहिए। हमे अपने कर्त्तव्यों को पूरा करते हुए जीवन व्यतीत करना चाहिए क्योंकि एक न एक दिन उनका अच्छा समय अवश्य आएगा। उन्हें धैयपूर्वक अपने बुरे दिन काट लेने चाहिए।

❖❖

खण्डकाव्य-खण्ड

1

मुक्तिदूत

—डॉ. राजेन्द्र मिश्र

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पृ० सं० 144-145 पर देखिए।
2. पृ० सं० 144 पर देखिए।
3. पृ० सं० 144 पर देखिए।
4. पृ० सं० 144 पर देखिए।
5. पृ० सं० 145 पर देखिए।
6. पृ० सं० 145 पर देखिए।
7. पृ० सं० 144 पर देखिए।
8. पृ० सं० 144 पर देखिए।
9. पृ० सं० 144 पर देखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. प्रथम सर्ग अधिक रुचिकर लगा क्योंकि इसमें गाँधी के बारे में बताया गया है कि उन्होंने कैसे देश का उद्धार किया (आगे के लिए का प्रथम सर्ग पृ०सं० 144 पर देखिए।
2. पृ० सं० 144 पर देखिए।
3. पृ० सं० 144 पर देखिए।
4. पृ० सं० 145 पर देखिए।
5. पृ० सं० 144 पर देखिए।
6. पृ० सं० 144 पर देखिए।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. मुक्तिदूत में अंकित समस्या आजादी की लड़ाई की है।
2. गाँधी जी
3. वीर रस।

❖❖

2

ज्योति जवाहर

–देवी प्रसाद शुक्ल 'राही'

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पृ० सं० 147-148 पर देखिए।
2. खण्डकाव्य के नायक पंडित जवाहर लाल नेहरू हैं। खण्डकाव्य में कवि ने नायक के व्यक्तित्व को भारत की सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक, साहित्यिक, धार्मिक और ऐतिहासिक विशिष्टताओं से समाहित करके नायक, जवाहर के व्यक्तित्व में निम्न विशेषताओं को देखा है। आलौकिक पुरुष, गाँधी से प्रभावित, समन्वयकारी लोकनायक, राष्ट्रीय भावों के प्रेरक, स्वाधीनता सेनानी, दृढ़-पुरुष, नीतिज्ञ एवं स्वाभिमानी, नवराष्ट्र के निर्माता, विश्वशान्ति के अग्रदूत।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. क्योंकि वह स्वतन्त्रता संग्राम के प्रमुख राजनेता के रूप में उभरे थे। उनके व्यक्तित्व में भारत की सारी अच्छाइयाँ जैसे भावात्मकता, एकता, भारतीय संस्कृति का संगम पाया जाता है।
2. गुजरात प्रदेश ने नेहरूजी को आशीर्वाद दिया।
3. ज्योति जवाहर में कश्मीर ने काव्य के नायक को आशीर्वाद दिया। ज्योति-ज्वाहर में कश्मीर सुख, शान्ति एवं गौरव की रमणीयता के रूप में नेहरू के सम्मुख आया। उसने नेहरू के सम्मुख आकर प्रतिज्ञा की कि मेरी तकदीर दूसरों की मर्जी से नहीं बदली जा सकती है। मैं भारत से कभी अलग नहीं हो सकता हूँ।
4. कवि ने पंजाब को एक वीर पुरुष के रूप में चित्रित किया है क्योंकि इस भूमि पर पंजाब केसरी लाला लाजपत राय, सरदार भगत सिंह जैसे वीर पुरुष ने जन्म दिया।
5. खण्डकाव्य की सम्पूर्ण घटनायें राष्ट्रीय और भावात्मक एकता की प्रतीक हैं। खण्डकाव्य के नायक पं. नेहरू भारतीय एकता के जीते-जागते-प्रतीक हैं। वे सम्पूर्ण भारत के साक्षात् प्रतीक है कवि के शब्दों में
   जब लगा देखने मानचित्र, भारत न मिला तुझको पाया।
   जब देखा तुझको नयनों से, भारत का चित्र उभर आया।
   इस प्रकार खण्डकाव्य की प्रत्येक घटना भावात्मक एकता के विभिन्न तत्वों का प्रतीक है। अत: ज्योति जवाहर खण्डकाव्य घटना न होकर भाव प्रधान है।
6. राष्ट्रीय एकता का भावात्मक चित्रण करना ही इस खण्डकाव्य का उद्देश्य है अथवा अनेकता में एकता प्रदर्शित करना ही कवि का उद्देश्य है। नेहरू को माध्यम बनाकर कवि ने अपना उद्देश्य सामने रखा है। कवि अपने उद्देश्य में पूर्ण सफल हुआ है।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. अकबर का सभी धर्मों का समन्वय करने वाला सहिष्णु रूप अंकित हुआ है।
2. पं० जवाहरलाल नेहरू के चरित्र का भव्य एवं प्रेरणास्पद रूप प्रस्तुत करना है।
3. पं० जवाहर लाल नेहरू।

❖❖

3

अग्रपूजा

—पं. राम बहोरी 'शुक्ल'

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पृ० सं० 149-150 पर देखिए।
2. 'अग्रपूजा' खण्डकाव्य के प्रधान पात्र श्रीकृष्ण हैं। वे ही खण्डकाव्य के नायक हैं। खण्डकाव्य की समस्त कथावस्तु उनसे सम्बन्धित है। उनके चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं।
   (i) सौन्दर्य शाली, (ii) साहसी तथा निर्भीक, (iii) परम-विक्रम, (iv) सहनशील, (v) निष्काम कर्मयोगी, (vi) नीति-निपुण, (vii) परम विश्वासी मित्र, (viii) असामान्य तेजस्वी, (ix) सर्वगुण सम्पन्न अलौकिक पुरुष।
3. युधिष्ठिर की विशेषताएँ—(i) निराभिमानी, (ii) विनयशील, (iii) उदार मानव, (iv) न्यायप्रिय तथा लोकप्रिय शासक, (v) कृतज्ञ।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. कवि ने 'अग्रपूजा' खण्डकाव्य में कृष्ण चरित्र पर आधारित एक पुरानी कहानी को आधुनिक भारतीय समाज के अनुरूप बनाकर प्रस्तुत किया है। वर्तमान भारतीय समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, विद्वेष तथा आपसी कलह को दूर करके दुराचारियों का शमन कर एक आदर्श समाज की स्थापना किस प्रकार की जाती है, यह स्पष्ट करना कवि का मुख्य उद्देश्य है।
2. पृ० सं० 149 पर देखिए।
3. पृ० सं० 149 पर देखिए।
4. पृ० सं० 149 पर देखिए।
5. पृ० सं० 149-150 पर देखिए।
6. पृ० सं० 150 पर देखिए।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. इस खण्डकाव्य का उद्देश्य श्रीकृष्ण के लोक मंगलकारी के रूप का चित्रण करना है। श्रीकृष्ण ने अभिमानी, निन्दक, तथा क्रोधी शिशुपाल का वधकर दुष्ट के आतंक की समस्या का हल किया है।
2. अर्जुन कुशल धनुर्धारी, कर्त्तव्यपरायण तथा क्षमाशील हैं।

❖❖

4 मेवाड़ मुकुट

—गंगारत्न पाण्डेय

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पृ० सं० 151- 152 पर देखिए।
2. मेवाड़-मुकुट खण्डकाव्य का नायक वीर महाराणा प्रताप है, इनके चरित्र की विशेषता निम्न हैं—
   (i) स्वदेशी प्रेमी, (ii) स्वतन्त्रता प्रेमी, (iii) स्वाभिमानी, (iv) दृढ़व्रती, (v) अप्रतिम वीर, (vi) स्नेही एवं दयालु
3. 'मेवाड़-मुकुट में भामाशाह जैसे अनुपम त्यागी, देशभक्त, दानवीर भी उत्पन्न हुए हैं। भामाशाह के चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—
   (i) अपार स्वाभिमानी, (ii) आदर्श दानवीर, (iii) सच्ची देशभक्ति, (iv) अनुपम त्यागी, (v) उत्साही एवं प्रेरक
4. 'मेवाड़-मुकुट' खण्डकाव्य में राणाप्रताप को 'मेवाड़-मुकुट' कहा गया है। वे खण्डकाव्य के नायक हैं। वे मेवाड़-मुकुट की स्वाधीनता और स्वाभिमान की रक्षा के लिए जीवन-भर संघर्ष करते रहे।
   उद्देश्य—इस खण्ड काव्य का उद्देश्य राष्ट्रीय प्रेम, स्वाभिमान, स्वतन्त्रता की वेदी पर सर्वस्व समर्पित करने की भावना, धार्मिक कट्टरता का त्याग आदि आदर्शों की प्रेरणा देना है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पृ० सं० 151 पर देखिए।
2. पृ० सं० 151 पर देखिए।
3. पृ० सं० 151 पर देखिए।
4. पृ० सं० 151-152 पर देखिए।
5. पृ० सं० 152 पर देखिए।
6. पृ० सं० 152 पर देखिए।
7. पृ० सं० 152 पर देखिए।
8. पृ० सं० 152 पर देखिए।
9. दौलत अकबर के मामा की पुत्री है। राणा प्रताप ने उसे पुत्री के समान स्नेह देते हुए शरण दी थी। उनकी निम्न विशेषता है—अनुपम सुन्दरी, प्रकृति प्रेमी, स्वतन्त्रता प्रेमी, धार्मिक सद्भावना से युक्त।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. महाराणा प्रताप
2. दौलत राणाप्रताप के यहाँ रहकर देखती है कि यहाँ मुगलों जैसे छल-कपट तथा अनुचित व्यवहार नहीं है। सर्वत्र ईमानदारी, राष्ट्रीयता तथा सच्चरित्रता विद्यमान है। शत्रु की बेटी होते हुए भी राणाप्रताप और ममतामयी रानी लक्ष्मी उसे अपार प्रेम करते थे। इसी से उसके मन में उनके प्रति अटूट श्रद्धा हो जाती है।
3. दौलत के प्रति राणा का वात्सल्य का भाव था।

❖❖

5

जय सुभाष

–विनोदचन्द्र पाण्डेय 'विनोद'

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पृ० सं० 154-155 पर देखिए।
2. सुभाषचन्द्र बोस 'जय सुभाष' खण्डकाव्य के नायक हैं। उनका चरित्र महान् और आदर्शवादी है। उनके चरित्र में अनेक गुणों का समावेश है वो निम्न है–
   (i) प्रखर प्रतिभाशाली, (ii) समाजसेवी, (iii) प्रभावशाली वक्ता, (iv) अनुपम त्यागी, (v) स्वाभिमानी की साक्षात् मूर्ति, (vi) स्वतन्त्रता के पुजारी, (vii) महान सेनानी, (viii) अनुपम आदर्श।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पृ० सं० 154 पर देखिए।
2. पृ० सं० 154 पर देखिए।
3. पृ० सं० 154 पर देखिए।
4. पृ० सं० 155 पर देखिए।
5. पृ० सं० 155 पर देखिए।
6. पृ० सं० 155 पर देखिए।
7. पृ० सं० 155 पर देखिए।
8. पृ० सं० 155 पर देखिए।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. सुभाषचन्द्र बोस पर उनकी माँ प्रभावती, गुरुवेणी माधवदास, स्वामी विवेकानन्द, देशबन्धु चितरंजन दास, रामकृष्ण,बुद्ध तथा भीष्म का पर्याप्त प्रभाव पड़ा।
2. आजाद हिन्द फौज के चार बिग्रेड–(i) नेहरू, (ii) गाँधी, (iii) बोस, (iv) आजाद।
3. सुभाषचन्द बोस

❖❖

6

मातृभूमि के लिए

–डॉ. जयशंकर त्रिपाठी

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पृ० सं० 157-158 पर देखिए।
2. 'मातृभूमि के लिए' खण्डकाव्य के नायक चन्द्रशेखर आजाद के चरित्र की विशेषता हैं—
   (i) प्रभावशाली व आकर्षक व्यक्तित्व, (ii) सच्चे देशभक्त तथा परम उत्साही, (iii) भावुक, (iv) कुशल संगठन कर्त्ता, (v) दृढ़ निश्चयी (vi) निर्भीक और साहसी, (vii) अपराजेय, (viii) अमर बलिदान।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पृ० सं० 157 पर देखिए।
2. पृ० सं० 157 पर देखिए।
3. पृ०सं० 157 पर देखिए।
4. ब्रिटिश सरकार ने भारत में सुधार के नाम लेकर इंग्लैण्ड के हाईकोर्ट के जज मि० जस्टिस रौलट के सभापतित्व में एक कमेटी नियुक्त की थी जो नये कानूनों को बनाकर दे, जिससे शासन को शान्तिमय किया जा सके। 'रौलट एक्ट' कहा जाता है।
5. पृ० सं० 157-158 पर देखिए।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. चन्द्रशेखर आजाद
2. आजाद हिन्द फौज
3. जलियाँवाला बाग

❖❖

7

कर्ण

–केदारनाथ मिश्र 'प्रभात'

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पृ० सं० 159 पर देखिए।
2. पृ० सं० 159 पर देखिए।
3. पृ० सं० 159 पर देखिए।
4. पृ० सं० 159-160 पर देखिए।
5. पृ० सं० 160 पर देखिए।
6. पृ० सं० 160 पर देखिए।
7. पृ० सं० 160 पर देखिए।
8. भीष्म पितामह के चरित्र की विशेषताएँ—
   (i) परमवीर तथा वीर शिरोमणि, (ii) धर्मात्मा, (iii) न्याय और पराक्रम के प्रति आदर-भावना, (iv) नीतिज्ञ।
9. कृष्ण के चरित्र की विशेषताएँ—
   (i) पांडवों का शुभचिन्तक, (ii) कुशलनीतिज्ञ, (iii) पराक्रम प्रेमी, (iv) परिस्थिति-मर्मज्ञ, (v) पाण्डवों के रक्षक, (vi) मायावी।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. इस खण्डकाव्य में लेखक ने कर्ण की वीरता, साहस, दानवीरता आदि गुणों के साथ ही उसके जीवन के करुण रस का सुन्दर चित्रण किया है। प्रस्तुत खण्डकाव्य की कथा का मुख्य बिन्दु कर्ण ही है। अत: इस खण्डकाव्य का शीर्षक 'कर्ण' उपयुक्त ही है।
2. पृ० सं० 159 पर देखिए।
3. पृ० सं० 159 पर देखिए।
4. पृ० सं० 159 पर देखिए।
5. पृ० सं० 160 पर देखिए।
6. दौपद्री पांचाल नरेश द्रुपद की पुत्री थी। उसके स्वयंवर में अर्जुन ने लक्ष्य भेदकर विजय प्राप्त करके उसके गले में वरमाला पहनाई। द्रौपदी के चरित्र के गुण हैं—निर्भीक महिला, वाक्पटुता

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. कर्ण
2. दु:शासन ने
3. कर्ण को पाण्डवों के पक्ष में लाने के लिए।

❖❖

8

कर्मवीर भरत

–लक्ष्मी शंकर मिश्र 'निशंक'

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पृ०सं० 162-163 पर देखिए।
2. 'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य का नायक भरत है। उसके चरित्र में निम्नलिखित विशेषताएँ देखने को मिलती हैं जो इस प्रकार से है–(i) वीर और महामानव, (ii) अनन्य भ्रातृ प्रेमी, (iii) परम तपस्वी और त्यागी, (iv) भावुक, (v) पवित्र और निश्छल हृदय, (vi) प्रजापालक, (vii) आदर्श महापुरुष।
3. 'कर्मवीर भरत' में कैकेयी का चरित्र बहुत महान दिखलाया है। उसने राम को किसी दुर्भावना से वनवास नहीं दिया, बल्कि उसका उद्देश्य था मानव जाति का परम उत्कर्ष और राम का हित। संक्षेप में उसके चरित्र में निम्नलिखित विशेषताएँ देखते हैं–(i) सच्ची माता, (ii) लोक मंगल की साधिका (iii) मानवमात्र का हित चाहने वाली, (iv) वीर और साहसी नारी, (v) राजनीति की कुशल ज्ञाता, (vi) वीरांगना तथा युद्ध नीति निपुण।
4. राम के चरित्र की विशेषताएँ–(i) रघुकुल का आदर्श (ii) शक्ति, शील एवं सौन्दर्य का समन्वित रूप, (iii) प्रेम, दया और दया के आगार, (iv) कर्त्तव्य प्रेमी, (v) दृढ़ निश्चयी, (vi) भरत के प्रति अगाध प्रेम।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पृ०सं० 162 पर देखिए।
2. पृ०सं० 162 पर देखिए।
3. पृ०सं० 163 पर देखिए।
4. पृ०सं० 163 पर देखिए।
5. पृ०सं० 163 पर देखिए।
6. पृ०सं० 163 पर देखिए।
7. जब भरत अयोध्यापुरी में प्रवेश करते हैं तो उन्हें चारों ओर नीरसता दिखाई पड़ती है। अयोध्यावासियों के मुख पर शोक व्याप्त था और सभी मौन होकर संकेतों से बातें करते हुए दिखाई पड़ रहे थे। भरत के समीप स्वागत के लिए कोई भी नहीं जा रहा था। इस प्रकार भरत को अयोध्यापुरी श्मशान-सी लग रही थी।
8. 'कर्मवीर भरत' में कैकेयी का उद्देश्य राम को वन भेजने में लोकहित की भावना का था। वह भली प्रकार जानती थी कि राम मुनि विश्वामित्र के साथ वन-जीवन बिता चुके थे और उसके कष्टों तथा समस्याओं से परिचित थे। अत: वनवासियों का कल्याण वे ही कर सकते हैं।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. कैकेयी 'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य में मातृत्व के प्रति सजग, उदात्त तथा गरिमामय नारी के रूप में प्रस्तुत की गयी है।
2. कवि का उद्देश्य मानव मन का यथार्थ अंकन करना है, इसीलिए कैकेयी को ममतामयी जागरुक माँ तथा भरत को कर्मशील त्यागी भाई के रूप में चित्रित करके कवि ने भौतिकता का परिचय दिया है।
3. भरत।

❖❖

9

तुमुल

—श्यामनारायण पाण्डेय

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पृ०सं० 165-166 पर देखिए।
2. पृ०सं० 166 पर देखिए।
3. 'तुमुल' खण्डकाव्य का नायक लक्ष्मण है। लक्ष्मण इस खण्डकाव्य का केन्द्र-बिन्दु है। 'तुमुल' के आधार पर लक्ष्मण के चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ निम्न हैं—(i) परम सौन्दर्यशाली, (ii) विनय और शीलवान, (iii) परम शक्तिवान (शक्ति के पुंज) (iv) सर्व-विद्या सम्पन्न (v) मानवीय गुणों के भण्डार।
4. 'तुमुल' खण्डकाव्य का प्रतिनायक मेघनाद है, वह राक्षसराज रावण का पुत्र है। देव, दानव सभी उसकी वीरता का बखान करते हैं। उसके चरित्र में निम्न विशेषताएँ हैं—(i) पितृ भक्त, (ii) महान योद्धा, (iii) धैर्यवान् और विवेकी, (iv) नीति कुशल, (v) धर्मपालक तथा यज्ञनिष्ठ, (vi) आत्म विश्वासी तथा अभिमानी।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पृ०सं० 166 पर देखिए।
2. पृ०सं० 166 पर देखिए।
3. पृ०सं० 166 पर देखिए।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. वीर रस मुख्य रस है।
2. लोक कल्याण करना मुख्य उद्देश्य है।
3. लक्ष्मण।

❖❖

व्याकरण खण्ड

1

प्रकरण–1

काव्य सौन्दर्य के तत्व

रस

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पृ०सं० 169 पर देखिए।
2. पृ०सं० 169-170 पर देखिए।
3. पृ०सं० 169-170 पर देखिए।
4. पृ०सं० 169-170 पर देखिए।

छन्द

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पृ०सं० 171-172 पर देखिए।
2. छन्द अनेक प्रकार के होते हैं। मात्रिक छन्द का उदाहरण—
   राम नाम मणि दीप धरि, जीह देहरी द्वार।
   तुलसी भीतर बाहि रहु, जो चाहसि उजियार॥
   इस छन्द में 24-24 मात्राओं की दो पंक्तियाँ होती हैं। इसके प्रथम तथा तृतीय चरण में 13-13 मात्राएँ तथा दूसरे और चौथे चरण में 11.11 मात्राएँ होती हैं अंत में लघु होता है।
3. पृ०सं० 172 पर देखिए।

अलंकार

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पृ०सं० 173-174 पर देखिए।
2. पृ०सं० 173-174 पर देखिए।
3. पृ०सं० 174 पर देखिए।

❖❖

2

प्रकरण–2

शब्द–रचना के तत्व

(1. उपसर्ग, 2. प्रत्यय, 3. समास, 4. तत्सम एवं तद्भव शब्द, 5. पर्यायवाची शब्द)

उपसर्ग

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पृ०सं० 176 पर देखिए।
2. पृ०सं० 176-177 पर देखिए।

प्रत्यय

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पृ०सं० 178 पर देखिए।
2. पृ०सं० 178 पर देखिए।

समास

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पृ०सं० 179 पर देखिए।
2. पृ०सं० 180-181 पर देखिए।

तत्सम शब्द और तद्भव शब्द

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पृ०सं० 182 पर देखिए।
2. पृ०सं० 182 पर देखिए।
3. पृ०सं० 182 पर देखिए।
4. श्वास–साँस बाकी के पृ०सं० 182-183 पर देखिए।
5. पृ०सं० 182-183 पर देखिए। किवाड–कपाट।

पर्यायवाची

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पृ०सं० 184 पर देखिए।
2. पृ०सं० 184-185 पर देखिए।

❖❖

प्रकरण–3

3

संस्कृत व्याकरण एवं अनुवाद

(1. सन्धि, 2. शब्द रूप, 3. धातु रूप, 4. हिन्दी-संस्कृत अनुवाद)

सन्धि

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पृ०सं० 187 पर देखिए।
2. पृ०सं० 187 पर देखिए।
3. पृ०सं० 189 पर देखिए।
4. पृ०सं० 189 पर देखिए।
5. पृ०सं० 187-188 पर देखिए।

शब्द-रूप

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पृ०सं० 191 पर देखिए।
2. पृ०सं० 191 पर देखिए।
3. पृ०सं० 192 पर देखिए।

धातु-रूप

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पृ०सं० 193 पर देखिए।
2. पृ०सं० 193 पर देखिए।
3. पृ०सं० 193 पर देखिए।
4. पृ०सं० 193 पर देखिए।
5. पृ०सं० 193 पर देखिए।
6. पृ०सं० 192-193 पर देखिए।
7. पृ०सं० 193 पर देखिए।
8. पृ०सं० 192-193 पर देखिए।
9. पृ०सं० 193 पर देखिए।
10. पृ०सं० 193 पर देखिए।
11. पृ०सं० 192 पर देखिए।
12. पृ०सं० 192-193 पर देखिए।

हिन्दी के सरल वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद।

❖❖